किशोर-उपन्यास-माला क्रम : ४२

किशोर-उपन्यास-माला
शेक्सपियर-साहित्य-सीरीज़



भूल पर भूल

रूपान्तरकर्ता :
शत्रुघ्नलाल शुक्ल

शेक्सपियर के नाटक *Comedy of Errors*
पर आधारित किशोरोपयोगी उपन्यास

उमेश प्रकाशन
५, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६

किशोर-उपन्यास-माला

[सचित्र, सरस तथा स-उद्देश्य]

वीर रस से पूर्ण

अर्जुन	श्रीकृष्ण
हल्दी घाटी	दुर्गादास
राजा सूरजमल	तात्या टोपे
महाबली इन्द्र	वीर कुंवरसिंह
खूब लड़ी मर्दानी	इन्द्र की पराजय
गुरु गोविन्द सिंह	सम्राट् शिलादित्य
चित्तौड़गढ़ की रानी	चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
वीरांगना चेन्नम्मा	महाबली छत्रसाल
गढ़मण्डल की रानी	बाजीराव पेशवा
चक्रवर्ती दशरथ	वीर कुणाल
जय भवानी	अभिमन्यु
कर्ण	भीष्म
उदयन	

अन्य महापुरुषों की जीवनियों पर आधारित

गुदड़ी का लाल : लालबहादुर	मदुरा की मीनाक्षी
रेलों का जादूगर	आचार्य चाणक्य
शान्ति-दूत नेहरू	देवता हार गए
ऋषि का शाप	स्वामी दयानन्द
गुरु नानक देव	राम का अश्वमेध
गुरु अमरदास	सम्राट् अशोक
गुरु अंगद देव	मीरां बावरी
गौतम बुद्ध	संत कबीर
रवि बाबू	विश्वामित्र

शेक्सपियर के नाटकों पर आधारित

तूफान	हैमलेट	निराशा
मैकबैथ	ओथेलो	भूल पर भूल
जूलियस सीज़र	राजा लियर	रोमियो जूलियट
जैसा तुम चाहो	राई से पहाड़	वेनिस का सौदागर

शिकार, ज्ञान-विज्ञान एवं 'अरेबियन नाइट्स' पर आधारित

दैत्याकार पक्षी का शिकार	पूपू	अलीबाबा : चालीस चोर
हवा और लल्लो	बाघ का शिकार	मगरमच्छ का शिकार
ह्वेल का शिकार	हाथी का शिकार	अरब के मसखरे

दरियाबर द्वीप की शहज़ादी

साहसिक कहानियाँ

रंग बिरंगी परियाँ
शान्ति की कहानियाँ
हमारे बहादुर जवान
सदाचार की कहानियाँ
हमारे बहादुर हवाबाज़
विश्व की साहसिक गाथाएँ
देश-देश की परियाँ भारत आईं
भारत के साहसी वीरों की गाथाएँ
शिकार की रोमांचकारी सच्ची गाथाएँ
साहस-रोमांच की सच्ची कहानियाँ
नेफा और लद्दाख के साहसी वीरों की गाथाएँ
आदमखोर पशुओं की सच्ची गाथाएँ
साहसी समुद्री वीरों की सच्ची गाथाएँ

उमेश प्रकाशन
५, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६

शत्रुघ्नलाल शुक्ल के

शेक्सपियर के नाटकों पर

आधारित लोकप्रिय रूपान्तर

- तूफान
- हैमलेट
- मैकबेथ
- ऑथेलो
- निराशा
- राजा लियर
- राई से पहाड़
- जैसा तुम चाहो
- जूलियस सीज़र
- रोमियो जूलियट
- वेनिस का सौदागर

किशोरों के लिए मौलिक पुस्तकें

- उदयन
- दुर्गादास
- मदुरा की मनाक्षी
- सम्राट शिलादित्य
- दैत्याकार पक्षी का शिकार
- विश्व की साहसिक गाथाएँ

(यूनेस्को द्वारा पुरस्कृत

एक

दोपहर ढल चुकी थी। कामकाजी लोग भोजन-विश्राम के बाद अपने-अपने काम की ओर बढ़ चले थे। सूरज का प्रकाश धीमा हो चला था, जिससे यह आभास मिल रहा था कि संध्या आ रही है। चिड़ियों के झुण्ड चहचहाते हुए चारे की खोज में उड़ रहे थे। यों, उनका कलरव लोगों की दृष्टि में निरर्थक था, पर चिड़िया शायद अपनी भाषा मे बातें कर रही थी। कोई चारे की चर्चा कर रही थी कोई आपबीती सुना रही थी और किसी-किसी में कुछ निजी बातों को लेकर तू-तू मैं-मैं हो रही थी। इसी प्रकार दूसरे जन्तु भी संध्या से पहले ही कुछ पा जाने की आशा में फिर रहे थे हवा में धीरे-धीरे ठण्डक आने लगी थी, जैसी कि रात में ओस से भीगी हुई हवा मे होती है। उसकी गति धीमी हो गई थी और अब वह भीनी-भीनी गन्ध भी देने लगी थी।

सायरेक्यूसा के अपने उद्यान 'हीवेनगार्डन' में ईजियन अपनी पत्नी इमोलिया के साथ टहल रहा था। वे दोनों प्राकृतिक दृश्यों पर ही चर्चा कर रहे थे। संसार के विशालकाय वृक्षों का प्रसंग छिड़ गया। ईजियन इस सम्बन्ध में देखी-सुनी घटनाओं का वर्णन कर रहा था। टहलते-टहलते वे दोनों एक यूकिलिप्टस के पेड़ के पास पहुँचे। पास ही पत्थर की सफेद चिकनी बेंच पड़ी हुई थी। ईजियन का हाथ पकड़कर इमोलिया ने कहा, "आओ, थोड़ी देर बैठ लें!"

"इतनी जल्दी थक गईं? तुमसे अच्छी तो बिलोचिस्तान की

वूढ़ियां हैं, जो कभी नहीं थकतीं।" ईजियन मुस्कराने लगा।

"विलोचिनों या हब्शिनों को कभी फुलवाड़ी में टहलना नसीव भी होता है? वे क्या जानें—आराम किसे कहते हैं?" इमीलिया वोली।

"अच्छा! तो इसका मतलव यह है कि तुम महज आराम के लिए वैठ गई हो, थकी नहीं हो, क्यों?"

"विल्कुल यही वात है। आखिर, क्या तुम्हें यह यूविलप्टस की सुगंध पसद नहीं आ रही? कितनी मीठी-ठंडी हवा चल रही है। अहा!" इमीलिया ने लम्वी सांस खींची और आंखें मूंदकर ऐसा भाव प्रदर्शित करने लगी, मानो हवा में तैरती सुगंध से वह तृप्त हो गई है।

ईजियन सायरेक्यूसा का एक ईसाई व्यापारी था। उसकी उम्र अभी केवल अट्ठाइस वर्ष ही थी, फिर भी वह वड़ा अनुभवी और वुद्धिमान था। अपनी लगन और कार्यकुशलता से उसने काफी धन एकत्र कर लिया था। उसके समुद्री जहाज अनेक प्रकार की वस्तुएँ लादकर देश-विदेश के वजारों में वेचा करते थे।

कई वन्दरगाहों पर उसके गोदाम वन गए थे; उनमें सवसे वड़ा गोदाम इपीडेमियम का था। प्रायः वहीं से ईजियन का सारा कारोवार चलता था सायरेक्यूसा तथा अन्य दूसरे स्थानों में उसकी पूंजी वहुत थोड़ी थी। उसका पचहत्तर प्रतिशत कारोवार इपीडेमियम में ही होता था। वहां उसका एक विश्वस्त मुनीम सारा प्रवन्ध संभाले हुए था। उसका नाम था वोची।

वोची वड़ा ही ईमानदार, परिश्रमी और स्वामिभक्त मुनीम था। ईजियन कहीं भी रहे, पर वोची के काम में कभी किसी तरह की ढिलाई न आने पाती थी। अपनी व्यवहार-कुशलता और मुस्तैदी से वह चार आदमियों का काम अकेले ही कर लेता था।

ईजियन को अपनी पत्नी इमीलिया से बहुत प्यार था। उसने जब यूकिलप्टस की सुगन्ध की प्रसंशा सुनी, तो सोचने लगा—किसी समय इसको भी इपीडेमियम की सैर करा दूं। वहा का दृश्य देखकर तो यह और भी मुग्ध हो उठेगी। उसने पूछा, "इमीलिया ! क्या सचमुच तुम्हें पेड़ पौधे बहुत पसंद हैं ?"

"ऐसा न होता, तो मैं माली के साथ इस फुलवाडी की देख-रेख में क्या अपना वक्त बरबाद करती ? जैसा मैंने इसका नाम रखा है वैसा ही इसे सजाया भी है।"

"हां, है तो यह 'होवेन गार्डन'[1] ही ! इसे देखते ही मन प्रसन्न हो जाता है।" ईजियन ने उसकी प्रशंसा की।

"अगर कोई अफ्रीका की ओर जाने वाला मिला, तो मैं उससे वे पेड मंगाऊंगी, जिनके विषय मे सुना जाता है कि मांसाहारी होते हैं। फुलवाड़ी में एक पेड वैसा भी आ जाए, तो अच्छा हो।"

"भला 'होवेन गार्डन' में उस मांसाहारी पेड की क्या जरूरत ? तब तो यह 'जाइण्ट गार्डन'[2] हो जाएगा !"

इमीलिया हंसने लगी, "तुम तो बाल की खाल निकालने लगे। मैंने सिर्फ अपने शौक की बात कही थी। मेरा मतलब यह था कि हमारी फुलवाडी एक छोटे-मोटे अजायब घर की तरह हो जाए, जिसमे दूर-दूर तक अनोखी वस्तुएं देखने को मिल सकें।"

ईजियन मुस्कराया, 'अगर ऐसा है, तो फिर टिसीटिसी भी पाल लो। क्या वह कम अनोखी है ?"

"टिसटिसी क्या है ?" इमीलिया ने पूछा।

"वही अफ्रीकन मक्खी, जिसके काटने से गहरी नींद की बीमारी हो जाती है उससे तुम्हारे अजायबघर की सजावट बढ जाएगी। पास-पडोस के जिन दो-चारबूढ़ों को खांसी के मारे

1. स्वर्ग का उद्यान—नन्दनवन। 2. राक्षस की वाटिका।

रात में नींद नहीं आती, वे बेचारे भी आराम से सो सकेंगे।" कहकर ईजियन हंसने लगा।

"हटो, तुम मुझे बनाते हो। मैं तुमसे नहीं बोलूंगी।" कहती हुई इमीलिया उठ खड़ी हुई।

"तो क्या, अब घर चलने का इरादा है? मेरा विचार था, थोड़ी देर यूक्लिप्टस की सुगंध का आनन्द और ले लिया जाए।" चिढ़ाने के लिए कहते हुए ईजियन ने इमीलिया का हाथ पकड़ लिया।

लेकिन इमीलिया बैठी नहीं उसने हाथ छुड़ा लिया और घर की तरफ चल पड़ी। ईजियन उसे पुकारता रहा, सुनो, सुनो तो!' पर इमीलिया ने पीछे की ओर देखा ही नहीं; जैसे ईजियन का एक भी शब्द न सुना हो। ईजियन उसकी चिढ़ पर मन ही मन आनंदित होता हुआ सोचने लगा—इतनी भोली है यह! हंसी-मजाक भी नहीं समझती। मैंने चिढ़ाने के लिए ही कहा था और यह सचमुच चिढ़ गई। कैसी भोली स्त्री है।

इमीलिया के निश्छल स्वभाव के बारे में सोचते-सोचते ईजियन प्रेम से विह्वल हो उठा। उसने मन ही मन निश्चय किया—अब की बार जब इपोडेंमियम जाऊंगा, तो इसे भी साथ लेता जाऊंगा। जरा यह भी देख ले कि समुद्र-यात्रा कितनी मजेदार होती है।

संध्या एकदम निकट आ गई थी। ईजियन यात्रा-संबंधी विचारों में लीन बैठा था। आहट पाकर उसका ध्यान भंग हो गया। घूमकर देखा, फाटक की तरफ से डाकिया चला आ रहा था। ईजियन चिट्ठियां पाने के लिए उतावला हो उठा। वह कई दिन से बोची के पत्र की राह देख रहा था। इधर तीन दिनों से उसकी कोई डाक नहीं आई थी।

डाकिए ने पास आकर सलाम करते हुए अपने थैले से तीन-

चार चिट्ठियाँ निकालीं और ईजियन को थमाकर अपनी राह लौट गया।

यात्रा की कल्पना मंद हो गई। ईजियन सजग मस्तिष्क से चिट्ठियां खोलने लगा। ये सब व्यापारिक पत्र थे और व्यापार के मामले में ईजियन कभी आलस्य नहीं करता था। पहला पत्र किसी आढ़तिए का था, जिसे ईजियन का माल अपनी दुकान में बेचने की इच्छा प्रकट की थी। दूसरा पत्र किसी मित्र का था, जिसने अगले महीने सायरेक्यूसा आने की सूचना दी थी। तीसरा पत्र किसी चर्च के पादरी का था, जिसने ईजियन से आर्थिक सहायता की आशा व्यक्त की थी। और चौथा यानी पत्र वोचो का था, जिसके लिए ईजियन के मन मे उत्सुकता थी। लेकिन पता देखकर वह चौंक पड़ा। पत्र इपीडैमियम ही से आया था। उस पर प्रेषक के स्थान पर सही मुहर भी पड़ी थी, पर ईजियन का पता कुछ टेढ़े अक्षरों में लिखा हुआ था। यह वोचो की हस्तलिपि नही थी। इस सर्वथा अपरिचित लिपि को देखकर वह आश्चर्य में पड़ गया—आखिर वोची ने अपने हाथों क्यों नही लिखा? हो सकता है।; उसने कोई मुंशी रख लिया हो और उसी से पत्र लिखाया हो। प्रबल जिज्ञासा के साथ उसने लिफाफा खोला। पत्र भी वोची का नहीं, किसी अपरिचित का ही लिखा हुआ था। उसमें केवल दो वाक्य थे—

प्रिय श्री ईजियन !

आपके मुनीम वोची की मृत्यु हो गई है। कृपया शीघ्र ही यहां आकर अपना कारोबार संभालिए !

आपका मित्र—डैगरे

ईजियन स्तब्ध रह गया। क्षण भर तो उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। वह बार-बार उस पत्र को पढ़ने लगा, पर उसके शब्द ज्यों के त्यों रहे। टूटे हुए मन से एक लम्बी सांस

छोड़कर ईजियन सामने के एक पेड़ की ओर निर्निमेष दृष्टि से देखने लगा। उसकी चेतना और विचारशक्ति लुप्त हो गई थी। इन अप्रत्याशित आघात से वह विक्षिप्त जैसा हो उठा। आंखों के सामने बोची के शव और अपनी दुकान की अस्त-व्यस्त स्थिति का चित्र रह-रहकर घूमने लगा। एकाएक उसे चेतना ने ठोकर दी—इस तरह बैठने स क्या होगा ? इपीडैमियम चलकर कार-बार संभालो, नहीं तो एक कौड़ी भी न बचेगी।

अर्थ-लोभ अत्यन्त ही प्रबल होता है। ईजियन झटके के साथ उठा और लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ घर की ओर चल पड़ा। कल्पना से उतर कर वह अब कर्तव्य के क्षेत्र में आ गया था। उसने कमरे में प्रवेश करते ही कोच पर लेटी हुई इमीलिया से कहा, ' इमीलिया, एक दुर्घटना हो गई है। मुझको तो आज ही इपीडैमियम जाना होगा।"

"क्या हुआ ?" इमीलिया ने खड़ी होकर पूछा। दुर्घटना शब्द सुनकर वह घबरा उठी थी।

"हमारे मुनीम बोची की मृत्यु हो गई है।"

"अरे ! क्या हुआ था उन्हें ? कब को बात है यह ?" इमीलिया भय और आश्चर्य से सिहर उठी। उसकी आंखें फैल गईं, चेहरे का रंग पीला पड़ गया और शरीर कांपने लगा। ईजियन ने उसे संभालकर कोच पर बिठाते हुए कहा, "अभी-अभी डैगरे का पत्र मिला। उसी से मालूम हुआ है।"

इमीलिया ने लम्बी सांस खींचकर जैसे अपने-आपसे कहा, "कितना ईमानदार और सीधा-सादा आदमी था बेचारा !"

"उसके रहते हम निश्चिन्त थे। कभी एक कौड़ी का भी फर्क नहीं आता था। वह कारोबार को अपना जानकर संभालता था।" भरे स्वर में ईजियन बोला।

"अब क्या होगा ? वहां का इन्तजाम कैसे संभालोगे ?"



"वही तो कह रहा था। मुझे तुरन्त ही इपीडैमियम जाना होगा। वहां पहुंचने में जितनी ही देर होगी, कारोबार को उतनी ही हानि पहुंचने की आशंका है।"

"मैं भी चलूंगी।" इमीलिया ने उतावले स्वर में कहा।

"इस समय तुम्हें साथ लेकर चलना ठीक न होगा, क्योंकि वहां पहुंचकर मुझे सारा कारोबार समझना पड़ेगा। दम मारने की भी फुरसत न मिलेगी। ऐसी दशा में तुम्हें परेशानी हो सकती है। मैं इस बार सारा प्रबन्ध करके लौट आऊं अगली बार तुम्हें साथ ले चलूंगा।"

"कब लौटोगे?"

"बस दो महीने के भीतर ही आ जाऊंगा।"

"दो महीने! ये तो बहुत हैं।" इमीलिया ने अधीर होकर कहा।

"वैसे मैं जल्दी लौटने की कोशिश करूंगा, पर दो महीने बाद तो जरूर ही लौट आऊंगा। वहां का काम चाहे जितना फैला हुआ हो, उसके लिए इतना समय काफी है।" ईजियन ने इमीलिया का हाथ थामते हुए आश्वासन दिया।

इमीलिया शान्त हो गई। फिर उसने किसी प्रकार का हठ नहीं किया। उठकर खड़ी हो गई और बोली, "तब ठीक है। मैं तैयारी कर देती हूं।"

"हां, एक जहाज कल सवेरे यहां से जाने वाला है, उसी से चला जाऊंगा। देर करना ठीक नहीं।"

ईजियन यात्रा की तैयारी में जुट गया। इमीलिया उसकी आवश्यक वस्तुओं को एकत्र करने लगी। दोनों ही बहुत खिन्न थे, क्योंकि यह यात्रा बोची की मृत्यु के कारण बड़े ही उदास वातावरण में हो रही थी।

सायरेक्यूसा में इमीलिया के दिन बहुत ही चिंता में बीत रहे थे। दो महीने का वादा करके ईजियन छः महीने में भी न लौटा था, इस कारण वह अधीर हो उठी थी। एक बात और थी—वह गर्भवती थी, इसलिए और भी बेचैन रहती थी। प्रसव का यह पहला ही अवसर था, इस कारण वह कुछ भयभीत भी थी। उसे अपने शरीर में भारीपन और सुस्ती का अनुभव होने लगा था। यह स्थिति उसकी बेचैनी को और भी बढ़ा देती थी। वह बार-बार यही सोचती थी कि कैसे पति के पास पहुंच जाऊं?

मोह का वेग बड़ा प्रबल होता है। ज्यों-ज्यों दिन बीत रहे थे, इमीलिया अपने पति को देखने के लिए अधिक व्याकुल होती जाती थी। उसका मन अस्थिर हो उठा। घर की ओर से जी उचट गया और अंततः वह इपीडेमियम जाने के लिए तैयार हो गई। दो दिन बाद एक जहाज जाने वाला था, उसी पर उसने अपनी यात्रा का प्रबंध करवा लिया। उसका बूढ़ा नौकर बहुत ही पुराना और विश्वस्त था। उसी को सारा भार सौंपकर अपनी गर्भावस्था की तनिक भी चिंता किए बिना वह इपीडेमियम के लिए रवाना हो गई। उस समय उसके मन में एक ही इच्छा थी—किसी प्रकार ईजियन को देख पाने की।

संयोगवश, जिस समय इमीलिया का जहाज इपीडेमियम पहुंचा, ईजियन किसी काम से बन्दरगाह के दफ्तर में आया हुआ था। चुंगी-अफसर उसका मित्र था। ईजियन उसी के कमरे में बैठा बातें कर रहा था। थोड़ी देर बाद जहाज के यात्री उतरकर नियमानुसार, अपने सामान की जांच कराने के लिए चुंगी-घर पहुंचने लगे। अफसर ईजियन से बातें करता रहा। उसका एक सहकारी यात्रियों का सामान देखकर रजिस्टर की खाना-पूरी कर रहा था। कभी-कभी अफसर यात्री से कोई प्रश्न भी कर लेता था। कमरे की स्थिति कुछ ऐसी थी कि अफसर का

मुंह दरवाजे की ओर था और ईजियन का अफ़सर की ओर। दरवाजा उसकी पीठ की ओर पड़ता था, इसलिए वह यात्रियों को नहीं देख पाता था। फिर उसे कोई कौतूहल भी नहीं था, क्योंकि वहां तो सैकड़ों यात्री रोज आते-जाते रहते थे।

इमीलिया भी बारी आने पर अपने दो संदूकों के साथ चुंगीघर में प्रविष्ट हुई और अफ़सर के सामने पहुंचकर सामान दिखाने लगी। ईजियन ने अभी तक उसकी ओर दृष्टि नहीं डाली थी। वह पूर्ववत् बैठा अफ़सर के साथ बातें करने में तल्लीन था। एकाएक अफ़सर चौंक पड़ा। इमीलिया के सामान में एक छोटा-सा चित्र देखकर उसे बहुत ही आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, "ठहरिए श्रीमती, क्या आप यह बता सकेंगी कि यह चित्र किसका है?"

"क्यों?" इमीलिया ने शंकित होकर पूछा।

"इसलिए कि मैं इसे पहचानता हूं।"

"पहचानते हैं तो फिर पूछते क्यों हैं?" इमीलिया ने रूखे स्वर में पूछा। वस्तुतः वह चुंगीघर में देर तक नहीं बैठना चाहती थी।

"मैं जानना चाहता हूं कि इस चित्र वाले व्यक्ति से आपका क्या सम्बन्ध है?" अफ़सर मुस्कराया।

"आपका क्या सम्बन्ध है?" चिढ़कर इमीलिया ने पूछा।

"मेरे तो मित्र हैं।" कहकर अफ़सर हंसने लगा।

मेरे पति हैं।" इमीलिया ने उत्तर दिया, पर वह हंसी नहीं। उसका चेहरा वैसा ही रूखा और कठोर बना रहा।

अफ़सर खुशमिजाज और ढीठ था। उसने कहा, "तो आइए, भेंट कर लीजिए। यहां आपके पति प्रत्यक्ष बैठे हुए हैं।" उसने सामने बैठे ईजियन की ओर संकेत किया।

ईजियन ने यात्री की ओर गरदन घुमाई। इमीलिया को देखते ही वह ठगा-सा रह गया। इमीलिया की भी यही दशा

हुई। पति-पत्नी दोनों ने जैसे ही एक-दूसरे की आंखों में झांका, उनके मुंह से एक साथ निकल पड़ा—"अरे तुम !" दोनों आनंद-विह्वल हो उठे। उनके हाथ परस्पर लिपट गए। चुंगी-अफसर ने दोनों हाथ आकाश की ओर उठाए और ठठाकर हंसता हुआ बोला, "आमीन !"

इजियन ने अफसर को धन्यवाद दिया और इमीलिया को लेकर घर की ओर चल पड़ा। बन्दरगाह के दो कुली उनका सामान सिर पर लादे हुए पीछे-पीछे चल रहे थे। रास्ते में ईजियन की जान-पहचान के बहुत-से लोग मिले। उन्होंने उसकी पत्नी को देखा तो बहुत ही प्रसन्न हुए। सबकी कौतूहल-मयी शुभ कामनाएं लेता हुआ ईजियन पत्नी के साथ घर पहुंचा।

ईपीडेमियम आने का पहला अवसर था, अतः पहले तो दो-तीन दिन इमीलिया कुछ अपरिचित-सी रही, बाद में उसकी झिझक दूर हो गई और वह पड़ोसियों से घुल-मिल गई।

ईजियन के घर के पास ही एक सराय थी। उसमें एक ईसाई परिवार टिका हुआ था। परिवार में केवल दो ही व्यक्ति थे—पति और पत्नी। वे वस्तुतः बहुत ही निर्धन थे। लोगों के फुटकर घरेलू काम करके अपनी जीविका चलाते थे इमीलिया से उस परिवार की महिला का परिचय हो गया था और वह प्रायः इसके घरेलू कामों में मदद देने आ जाया करती थी। इमीलिया दयावती और उदार थी। वह मजदूरी से कुछ अधिक ही उसे दे दिया करती थी। इस कारण वह स्त्री इमीलिया के प्रति बहुत विनम्र रहती थी। एक बात और थी—वह भी गर्भवती थी, अतः समान स्थिति में होने के कारण उनकी पारस्परिक सद्-भावनाएं और भी बढ़ती जा रही थीं। इमीलिया ने उसे आश्वासन दे रखा था—घबराओ नहीं, बच्चों के लिए मैं हर

तरह से तुम्हारी मदद करूंगी।

एक दिन संध्या को ईजियन बाजार से लौटा, तो घर के रंग-ढंग देखकर घबरा उठा। इमोलिया पलंग पर लेटी बुरी तरह से हाथ-पैर पटक रही थी। उसकी आंखें फैल गई थीं और वह बड़े ही करुण स्वर में कराह रही थी। वस्तुतः वह प्रसव-पीड़ा से व्याकुल थी। एक दासी उसे संभाल रही थी। ईजियन को आया देखकर उसने कहा, "तुरन्त किसी डाक्टर को बुलवाइए; स्वामिनी का दर्द बढ़ता जा रहा है।"

ईजियन हकबका गया, पर उसका भ्रम अगाध था। उसे वेदनाग्रस्त देखकर वह व्याकुल हो उठा। उसकी विवेक-शक्ति जैसे कुंठित-सी हो गई। भयभीत स्वर में उसने दासी से पूछा, किस डाक्टर को बुलाना है?"

"मेरिया जोसेफ को।"

मेरिया को? वह तो लेडी डाक्टर है।"

"उसी की जरूरत है, स्वामी! पुरुष को बुलाना ठीक नहीं है। स्वामिनी की गोद में बच्चा आने वाला है।"

ईजियन को पिता बनने का सौभाग्य पहली बार प्राप्त हो रहा था। वह बहुत ही उत्साहित हुआ। लेकिन दूसरे क्षण इमोलिया पर दृष्टि पड़ते ही उसका उत्साह मंद पड़ गया, वह अब भी बेचैनी के साथ तड़प-चिल्ला रही थी। दासी की बात सुनकर ईजियन ने अपने को संभाला और फौरन लेडी डाक्टर बुलाने के लिए चल पड़ा।

मेरिया जोसेफ को प्रसव-सम्बन्धी मामलों की अच्छी जानकारी थी। वह इपीडैमियम के बाहर तक बुलाई जाती थी। कार्यकुशल होने के साथ-साथ वह मृदुभाषिणी और मनोयोगी भी थी। फीस के लिए वह कभी किसी से उलझती नहीं थी। जो कुछ मिल जाता, उसी में प्रसन्न रहती। वह पहले

सेना में नर्स थी, बाद में पति की मृत्यु हो जाने के कारण यहां चली आई थी और प्राइवेट प्रैक्टिस कर रही थी।

ईजियन से इमीलिया की दशा सुनते ही वह झटपट तैयार हो गई और बैग में कुछ दवाएं आदि लेकर ईजियन के साथ चल पड़ी। उसने पहुंचते ही इमीलिया को संभाला और उचित परिचर्या करने लगी। अब तक पास-पड़ोस की स्त्रियों को भी समाचार मिल गया था और सहानुभूति के नाते वे भी एक-एक करके आने लगी थीं।

दो घण्टे बाद दासी ने बरामदे में चिंताकुल बैठे ईजियन से आकर बताया, "स्वामिनी ने दो बच्चों को जन्म दिया है!"

"ऐं! दो बच्चे!" ईजियन आनंद और आश्चर्य से चौंक पड़ा।"

"हां, स्वामी! आज से आप दो पुत्रों के पिता हो गए।"

"कैसे हैं? ठीक हैं न?"

"दोनों स्वस्थ और सुन्दर हैं, स्वामी! डाक्टर ने कहा है कि चिन्ता न करें, मां और बच्चों को कोई खतरा नहीं है।"

ईजियन आश्वस्त हो गया। पूछा, "तुमने बच्चों को देखा?"

"हां, स्वामी! दोनों बड़े सुन्दर हैं।"

"उनका चेहरा कैसा है? मेरा मतलब, वे अपनी मां की तरह हैं या मुझ जैसे?"

"वे तो···" दासी कुछ झिझकी, फिर कहने लगी, "आप दोनों से भिन्न हैं। फिर भी बहुत प्यारे और सुन्दर लगते हैं। उनमें एक बात बड़ी ही विचित्र दिखाई पड़ती है।"

ईजियन ने शंकित होकर पूछा, "वह क्या?"

"दोनों एक शक्ल-सूरत के हैं। यह नहीं पहचाना जा सकता कि अभी थोड़ी देर पहले मैंने किसको गोद में उठाया था। उनके हाथ-पैर, नाक-मुंह और बाल तक बिल्कुल एक ही तरह



क हैं। ऐसे बच्चे तो मेरे देखने-सुनने में कभी नहीं आए !"

"अच्छा !" ईजियन मन ही मन आनंदित हो उठा। उसने भावमग्न होकर आंखें मूंद लीं और सोचने लगा, ईश्वर की लीला भी कैसी अद्भुत है !

दासी ने उसे सजग करने के उद्देश्य से कहा, "स्वामी, डाक्टर ने आपको बुलाया है।"

ईजियन की विचार-निद्रा भंग हो गई। हड़बड़ा कर खड़ा हो गया। बोला, "चलो !"

मेरिया जोसेफ ने सफेद नए तौलियों में लिपटे हुए दो सुन्दर, स्वस्थ बालक लाकर ईजियन की गोद में देते हुए कहा, "यह लीजिए प्रभु की कृपा !" तो वह जैसे आनंद-विभोर हो उठा। दोनों बच्चे सचमुच एक ही रूप-रेखा के थे। रंचमात्र भी अन्तर न था। जुड़वां पुत्रों को निरखकर ईजियन का हृदय उल्लास से ललक उठा। उसने बच्चों को उठाकर बड़े ही प्यार से धीरे-से चूम लिया फिर मेरिया को देते हुए बोला, "मैं बहुत प्रसन्न हूं, डाक्टर ! बताओ, तुम्हें क्या दूं ?"

मेरिया कहने को तो पेशेवर डाक्टर और निस्संतान विधवा थी, पर उसके हृदय में ममता का समुद्र लहराता था। उसने बच्चों को छाती से लगाते हुए कहा, "इस मधुर सुन्दर जोड़ी को मैं अपनी गोद में ले सकी, इससे बड़ा पुरस्कार और क्या हो सकता है ! मुझे सब कुछ मिल गया।"

लेकिन ईजियन कृपण नहीं था। उसने मेरिया को ढेर से सुन्दर वस्त्रों-आभूषणों के साथ एक सौ मार्क दिए और कहा, "डाक्टर ! ईश्वर से प्रार्थना करो कि ये दोनों बच्चे दीर्घ-जीवी और प्रतापी हों !"

वह तो होंगे ही !" कहकर मोरिया ने अपनी शुभकामनाएं

एक सिक्का।

ट को, फिर इमीलिया तथा बच्चों की देख-रेख के सम्बन्ध
कुछ जरूरी बातें समझाकर लौट गई।

ईजियन के स्वभाव में अब बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया
ा। पुत्रों के लिए उसके मन में इतनी ममता उत्पन्न हो गई थी
क वह उन्हें छोड़कर कहीं भी न जाता था। यहाँ तक कि अपने
व्यापार के काम भी पहले जैसा लगन से नहीं करता था। उसे
संसार में अब केवल अपना परिवार ही प्रिय लगता। स्त्री और
बच्चे ही उसकी मोह-माया के केन्द्र थे। वह जो कुछ भी करता,
केवल उन्हीं के लिए। इमीलिया यदि उसकी आत्मा थी, तो
दोनों पुत्र उसकी आँखें थे। इनमें से किसी के प्रति वह अपना
प्रेम कम नहीं होने देना चाहता था। उनकी सुख-सुविधा के लिए
वह एक न एक चीज खरीदता रहता था।

कई महीने बीत गए। इमीलिया अब तक स्वस्थ हो चुकी
थी। बच्चे भी संभल गए थे। ईजियन ने उनके लिए एक छोटी
सुन्दर हवागाड़ी खरीद ली थी, जिस पर उन्हें बिठाकर टहलाने
ले जाया करता था। ईजियन गाड़ी ठेल रहा होता और इमीलिया
उसके बगल में चल रही होती। गाड़ी में बैठे हुए दोनों पुत्रों को
देखकर उसका मन गर्व से भर उठता था। वे दोनों इतने सुन्दर
और चैतन्य थे, जैसे ताजा खिले हुए दो कमल लाकर रख दिए
गए हों। रंग-रूप में उनकी अभिन्नता और भी बढ़ गई थी।
यहाँ तक कि ईजियन और इमीलिया भी यह नहीं पहचान पाते
थे कि थोड़ी देर पहले इनमें से कौन हँसा या रोया था।

जैसा कि ईजियन का नियम था, एक संध्या को वह सब
की ओर से बच्चों को सैर कराके लौट रहा था। इमीलिया भी
गाड़ी के साथ-साथ चल रही थी। एक चौराहे के पास उन्हों
देखा कि डाक्टर मेरिया तेजी से कदम बढ़ाती हुई चली आ र
है। दोनों ठहर गए। मेरिया पास आई तो ईजियन ने

क हैं। ऐसे वच्चे तो मेरे देखने-सुनने में कभी नहीं ग्राए !"

"ग्रच्छा !" ईजियन मन ही मन ग्रानंदित हो उठा। उसने भावमग्न होकर ग्रांखें मूंद लीं ग्रौर सोचने लगा, ईश्वर की लीला भी कैसी ग्रद्भुत है !

दासी ने उसे सजग करने के उद्देश्य से कहा, "स्वामी, डाक्टर ने ग्रापको वुलाया है।"

ईजियन की विचार-निद्रा भंग हो गई। हड़वड़ा कर खड़ा हो गया। वोला, "चलो !"

मेरिया जोसेफ ने सफेद नए तौलियों में लिपटे हुए दो सुन्दर, स्वस्थ वालक लाकर ईजियन की गोद में देते हुए कहा, "यह लीजिए प्रभु की कृपा !" तो वह जैसे ग्रानंद-विभोर हो उठा। दोनों वच्चे सचमुच एक ही रूप-रेखा के थे। रंचमात्र भी ग्रन्तर न था। जुड़वां पुत्रों को निरखकर ईजियन का हृदय उल्लास से ललक उठा। उसने वच्चों को उठाकर वड़े ही प्यार से धीरे-से चूम लिया फिर मेरिया को देते हुए वोला, "मैं वहुत प्रसन्न हूं, डाक्टर ! वताग्रो, तुम्हें क्या दूं ?"

मेरिया कहने को तो पेशेवर डाक्टर ग्रौर निस्संतान विधवा थी, पर उसके हृदय में ममता का समुद्र लहराता था। उसने वच्चों को छाती से लगाते हुए कहा, "इस मधुर सुन्दर जोड़ी को मैं ग्रपनी गोद में ले सकी, इससे वड़ा पुरस्कार ग्रौर क्या हो सकता है ! मुझे सव कुछ मिल गया।"

लेकिन ईजियन कृपण नहीं था। उसने मेरिया को ढेर से सुन्दर वस्त्रों-ग्राभूषणों के साथ एक सौ मार्क दिए ग्रौर कहा, "डाक्टर ! ईश्वर से प्रार्थना करो कि ये दोनों वच्चे दीर्घ-जीवी ग्रौर प्रतापी हों !"

वह तो होंगे ही !" कहकर मेरिया ने ग्रपनी शुभकामनाएं

एक सिक्का।

...की, फिर इमीलिया तथा बच्चों की देख-रेख के सम्बन्ध कुछ जरूरी बातें समझाकर लौट गई।

ईजियन के स्वभाव में अब बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया। पुत्रों के लिए उसके मन में इतनी ममता उत्पन्न हो गई थी कि वह उन्हें छोड़कर कहीं भी न जाता था। यहाँ तक कि अपने व्यापार के काम भी पहले जैसा लगन से नहीं करता था। उसे संसार में अब केवल अपना परिवार ही प्रिय लगता। स्त्री और बच्चे ही उसकी मोह-माया के केन्द्र थे। वह जो कुछ भी करता केवल उन्हीं के लिए। इमीलिया यदि उसकी आत्मा थी, तो दोनों पुत्र उसकी आँखें थे। इनमें से किसी के प्रति वह अपना प्रेम कम नहीं होने देना चाहता था। उनकी सुख-सुविधा के लिए वह एक न एक चीज खरीदता रहता था।

कई महीने बीत गए। इमीलिया अब तक स्वस्थ हो चुकी थी। बच्चे भी सम्हल गए थे। ईजियन ने उनके लिए एक छोटी सुन्दर हवागाड़ी खरीद ली थी, जिस पर उन्हें बिठाकर टहलाने ले जाया करता था। ईजियन गाड़ी ठेल रहा होता और इमीलिया उसके बगल में चल रही होती। गाड़ी में बैठे हुए दोनों पुत्रों को देखकर उसका मन गर्व से भर उठता था। वे दोनों इतने सुन्दर और चैतन्य थे, जैसे ताजा खिले हुए दो कमल लाकर रख दिए गए हों। रंग-रूप में उनकी अभिन्नता और भी बढ़ गई थी। यहाँ तक कि ईजियन और इमीलिया भी यह नहीं पहचान पाते थे कि थोड़ी देर पहले इनमें से कौन हँसा था या रोया था।

जैसा कि ईजियन का नियम था, एक संध्या को वह सड़क की ओर से बच्चों को सैर कराके लौट रहा था। इमीलिया भी गाड़ी के साथ-साथ चल रही थी। एक चौराहे के पास उन्होंने देखा कि डाक्टर मेरिया तेजी से कदम बढ़ाती हुई चली आ रही है। दोनों ठहर गए। मेरिया पास आई तो ईजियन ने पूछा

"कहां से आ रही हो, डाक्टर ?"

"जरा सराय तक गई थी। वहां एक वहुत ही निर्धन परिवार टिका हुआ है। उसकी स्त्री को भी जुड़वां वच्चे हुए है, उन्हीं को देखने गई थीं।"

"कैसे हैं ?" ईजियन ने पूछा।

"वैसे तो ठीक है, लेकिन कमजोर है क्योंकि उनके मां-वाप वहुत ही निर्धन हैं। खाने-पीने की तंगी से वह स्त्री भी वहुत कमजोर है दो-दो वच्चों को संभाल सकना उसके लिए वड़ा कठिन दिखाई पड़ता है, क्योंकि उसका पति एक गरीव मजदूर है। वह कहां से किसी चीज का इंतजाम कर सकेगा ?"

"वच्चे अच्छे हैं ?" इमीलिया ने स्त्री-सुलभ जिज्ञासा से पूछा।

मेरिया वोली, "अच्छे तो वहुत हैं, मगर कमजोर है। यों, देखने में वड़े सुन्दर और प्यारे लगते हैं। लेकिन इससे भी वढ़कर एक वात ऐसी आश्चर्यजनक हैं कि उसे सुनकर आपको ताज्जुव होगा।"

इमीलिया और ईजियन दोनों के मुंह से एक साथ ही निकला, "क्या ?'

"उनकी शक्ल-सूरत भी विल्कुल एक ही तरह की है।"

"अच्छा !" दम्पत्ति ने अचरज से मेरिमा का मुंह ताका।

"ईश्वर की कारीगरी है और क्या कहूं ! जाकर देख लीजिए न !"

"आज नहीं, कलसवेरे ! इस वक्त शाम हो गई।" कहकर ईजियन ने पश्चिम में छाई लाली की ओर देखा और गाड़ी का हैण्डिल पकड़कर इमीलिया को इशारा किया, "चलो !"

मेरिया ने उसे नमस्कार किया और चली गई। ईजियन ने गाड़ी को आगे की ओर ठेलते हुए कहा, "इमीलिया ! विचित्र

संयोग है।"

"है तो बिल्कुल अनोखी घटना !" कहकर इमीलिया ने गाड़ी में बैठे अपने दोनों बच्चों की ओर ममतामयी दृष्टि से ताका, फिर ईजियन के बराबर सटकर चलने लगी। अंधेरा बढ़ने लगा था। उन्होंने चाल तेज कर दी और बत्ती जलते-जलते घर आ गए।

रात में इमीलिया ने ईजियन से कहा, "डाक्टर बता रही थी कि उन बच्चों के मां-बाप बहुत गरीब हैं। यहां तक कि वे बच्चों को ठीक से पाल भी नहीं सकते। मेरा विचार है कि सबेरे हम लोग वहां चलें और उस,निर्धन परिवार को कुछ देकर बदले में उन बच्चों को ले लें। हमारे यहा वे अच्छी तरह पल जाएंगे। आगे चलकर हमारे बच्चों के साथ खेलेंगे और बड़े होने पर उनकी सेवा भी करेंगे।

"लेकिन उनके मां-बाप राजी होंगे ?"

"होंगे क्यों नहीं ? जब अपना पेट भरना मुश्किल है, तो बच्चों को कहां से पालेंगे ? बहुतेरे लाग ऐसा करते हैं। कल तुम चलो तो !

"ठीक है, सबेरा होने दो। जैसा होगा, देखा जाएगा।" ईजियन ने करवट बदल ली।

तीन

अब ईजियन के घर की चहल-पहल बढ़ गई थी, क्योंकि बच्चों की संख्या दो से चार हो गई थी। दूसरे ही दिन ईजियन ईमीलिया को साथ लेकर सराय गया था और उस निर्धन परिवार को सौ ड्यूकेट देकर दोनों बच्चों को खरीद लाया था। ये बच्चे उसी स्त्री के थे, जो कभी-कभी इमीलिता के पास आया करती थी। इमीलिया और ईजियन की दयालुता पर उसे विश्वास था, अतः उसने दोनों बच्चे उन्हें दे दिए थे। अपने पास तो उनके पालन-पोषण करने का कोई साधन था नहीं, जबकि यह निश्चित था कि ईजियन के पास वे आराम से रह सकेंगे और आगे चलकर उसके पुत्रों के सेवक होकर भी भाई के समान रहेंगे। बचपन से ही साथ रहने के कारण उनमें परस्पर प्रेम-भाव अवश्य ही उत्पन्न हो जाएगा।

ईजियन ने दासी-पुत्रों को भी उसी स्नेह और प्रबंध से पाला जिस प्रकार अपने बच्चों को। उनके लिए वह एक ही तरह के खिलौने, कपड़े और फल आदि लाया करता था। रूप-रेखा और पोशाक की वैसी विचित्र समता देखकर लोगों को आश्चर्य होता था। यहां तक कि कभी-कभी तो इस अद्भुत संयोग के विषय में वे ईजियन को बधाई भी देने लगते थे।

कुछ दिन और बीते। बच्चे अब तक संभल गए थे। ईजियन ने उनके नाम भी एक ही शब्द से रखे थे। अपने पुत्रों को वह 'एण्टीफोलस' कहता था और दासी-पुत्रों को 'ड्रोमियो' नाम

दिया था। पर आगे चलकर इसमें गड़बड़ी होने लगी। एक ड्रोमियो को पुकारने पर दूसरा ड्रोमियो दौड़ पड़ता और दूसरे एण्टीफोलस को बुलाने पर पहला हाजिर हो जाता। इसमें कभी तो मनोरंजन होता और कभी उलझन भी पैदा हो जाती थी—किसी चीज का बंटवारा ऐसी दशा में ठीक से नहीं हो पाता था। हारकर ईजियन ने अपनी सुविधा के लिए उन्हें एण्टीफोलस-ए और एण्टीफोलस-बी तथा ड्रामियो-ए और ड्रोमियो-बी कहना शुरू किया। लेकिन फिर भी समस्या नहीं सुलझी, क्योंकि थोड़ी देर बाद यह नहीं पहचाना जा सकता था कि पहले किसने बात की गई थी। पहचान के लिए अंत में इजोलिया ने एण्टीफोलस-ए और ड्रोमियो-ए के कोट के कालर में एक-एक फूल बना दिया ताकि कोई भ्रम न हो। इसप्रकार ड्रोमियो-ए को एण्टीफोलस-ए का और ड्रोमियो-बी एण्टीफोलस-बी का साथी और सेवक निश्चित कर दिया गया।

दो वर्ष बीत चुके थे। इस अवधि में ईजियन का व्यापार बहुत कुछ बढ़ गया था। बाजार में उसकी साख भी पहले से अधिक हो गई थी। उसके जहाज और दूर-दूर के बन्दरगाहों तक जाने लगे थे। चूंकि बच्चों की वजह से उसका घर भरा-पूरा रहता था, इसलिए वह सारा कार्य बड़े उत्साह के साथ करता था। उसकी प्रबल इच्छा थी, अपने पुत्रों के लिए अधिक से अधिक धन-सम्पत्ति जुटा सके। लेकिन उसकी स्त्री इमीलिया का मन इन दिनों उचट-सा गया था। दो वर्ष से इपीडेनियम में रहते-रहते वह ऊब गई थी। उसे अपने सायरेक्यूसा वाले घर की याद अक्सर सताया करती थी। आखिर वह मातृभूमि थी। उसने एक दिन ईजियन से अपने मन की बात कह दी, "अब तो सायरेक्यूसा चलने को जी चाहता है। यहां रहते बहुत दिन हो गए। मुझे अपने घर की याद आ रही है।"

ईजियन की विचारधारा भी पीछे की ओर मुड़ गई। बीते हुए दिनों की स्मृतियां उसे पुकारने लगीं। सायरेक्यूसा का कण-कण उसकी आंखों में नाचने लगा। एक क्षण तक मौन रहकर उसने कहा, "हां, बोची की मृत्यु के बाद जब से आया हूं, फिर वहां नहीं लौट सका।"

"दो वर्ष तो मुझे ही आए हो रहे हैं। आप तो और भी कई महीने पहले आए थे!" इसीलिया बोली।

"लेकिन, यहां का कारोबार कुछ इस तरह उलझकर फैला हुआ है कि बिना उसका पूरा इंतजाम किए मैं कहीं जा नहीं सकता।"

"तो इंतजाम कीजिए न!"

"लेकिन उसके लिए बोचीं जैसा ही ईमानदार और मेहनती आदमी होना चाहिए, जो आसानी से नहीं मिलेगा।"

"वह मैं कुछ नहीं जानती। अगर हफ्ते भर में आप घर चलने की तैयारी नहीं कर लेते, तो मैं अगले शुक्रवार को चली जाऊंगी। मेरे लिए एक-एक मिनट पहाड़ हो रहा है।" इमीलिया ने स्त्री-हठ और अधिकार के स्वर में कहा।

ईजियन मुस्करा पड़ा, "अकेली चली जाओगी?"

"यह कोई मुश्किल काम है क्या? जैसे चली आई हूं, वैसे ही चली भी जाऊंगी। हिम्मत होनी चाहिए, बस।" इमीलिया ने अपनी निर्भीकता का आभास दिया।

"लेकिन सुनो तो!" ईजियन बोला, "इस बार तुम्हारी गोद में चार बच्चे हैं, जबकि आते समय तुम निरी अकेली थीं। यात्रा में बच्चों को संभाल लोगी।"

इमीलिया ने रूठकर पूछा, "तो क्या सचमुच आप नहीं चलेंगे? सायरेक्यूसा से कोई वैर हो गया है आपको? धन के लोभ में क्या आप इस तरह मातृभूमि को त्याग देंगे? बताइए?"

ईजियन शान्त स्वभाव का व्यक्ति था। वह तून-तनाव से बहुत घबराता था। उसने इमोलिया को उलझते देखकर विवाद निबटाने के लिए कह दिया, "इतना क्यों बिगड़ रही हो जी! मैंने तो हंसी में कह दिया था। तुम तैयारी करो, मैं शुक्रवार को पहले ही जहाज से चल दूंगा।"

"सच!" इमोलिया ने आनन्द से उसकी ओर देखा।

"क्या ईजियन कभी झूठ बोलता है? क्या तुम उसे षड्यंत्री कह सकती हो? उसने कब अपना वादा पूरा नहीं किया?"

इमोलिया गद्गद् हो उठी। उसने एक कदम और आगे बढ़कर ईजियन के हाथ थाम लिए और अपना सिर उसकी छाती पर टेक दिया। इस आनन्दमयी कल्पना से उसका रोम-रोम पुलकित हो उठा—जब मैं एक ही शक्ल-सूरत के अपने जुड़वां बच्चों को और उसी तरह के उनके सेवकों को लेकर सायरेक्यूसी वाले मकान में पहुंचूंगी, तो पड़ोसी लोग हमें देखकर कितने अचरज में पड़ेंगे?

ईजियन बाहर चला गया और इमोलिया घरेलू कामों में जुट गई। शुक्रवार आने में अभी चार दिन बाकी थे। इमो बोन सारा प्रबंध कर लेना था, इसलिए वह शीघ्रतापूर्वक घर का एक एक काम निबटाने लगी।

ईजियन भी सारा लेन-देन सम्भालने लगा। उसने एक नया मुनीम रख लिया था। सारी जिम्मेदारी उसी को सौंप [illegible] व्यापारियों से उसका परिचय कराने लगा, ताकि कारोबार में कभी कोई उलझन न खड़ी हो।

बीच के चार दिन आखिर निकल ही गए और [illegible] गया। सवेरे ठीक नौ बजे 'सिल्वरफिश' नामक जहाज [illegible] के लिए रवाना होने वाला था। ईजियन ने उसी में [illegible] का प्रबंध किया। आठ बजते-बजते वह सारा [illegible]

को लेकर बन्दरगाह पर आ गया। उसे पहुंचाने के लिए कई मित्र, पड़ौसी तथा नौकर भी जहाज तक आए थे। एक केबिन में पहले से ही सारा सामान रख दिया गया था। बन्दरगाह पर बड़ी चहल-पहल थी। यात्रियों के अलावा उन्हें विदाई देने वालों नौकरों, कुलियों और दूसरे तमाम लोगों की अच्छी-खासी भीड़ थी, जैसे कोई मेला हो। इमीलिया ने नौकरों को इनाम दिया, पड़ोसियों को नमस्कार किया और फिर कभी आने का वादा करके ईजियन के बगल में खड़ी हो गई। ईजियन अपने मित्रों से बातें कर रहा था।

जहाज छूटने का समय हो गया। ईजियन ने सबसे प्रेमपूर्वक विदा ली और बच्चों तथा पत्नी को लेकर अपने केबिन की ओर बढ़ चला। थोड़ी ही देर बाद जहाज ने लंगर उठा लिया और समुद्र की छाती चीरता हुआ, सायरेक्यूसा की ओर तैर चला। इपीडैमियम का तट क्रमशः उससे दूर होने लगा, जैसे विरक्त हो गया हो।

उन दिनों विज्ञान ने आज जैसी उन्नति नहीं की थी, इसलिए जहाजों की शक्ति कम रहती थी। उन्हें हवा के रुख का सदैव ध्यान रखना पड़ता था। उन्हें मल्लाहों का भरोसा रहता था, क्योंकि आज के-से यंत्र उस समय बने ही नहीं थे। जहाजों की गति भी धीमी होती थी, इसलिए समुद्र-यात्रा निरापद नहीं मानी जाती थी। पग-पग पर समुद्री डाकुओं का—जो अपने बेड़े के साथ घूम-घूमकर लूट-मार किया करते थे—और तूफानों का खतरा रहता था। इन दोनों में फंसकर शायद ही कोई जहाज कभी बच करके निकला हो, वरना सब-के-सब नष्ट हो जाते थे। डाकू लोग दूर ही से बाणों के द्वारा चिनगारियां फेंककर यात्री-जहाज में आग लगा देते थे। उस समय के कई ऐसे जहाजों का नाम आज भी सुना जाता है, जिनकी करोड़ों पौंड की सम्पदा

डाकुओं ने लूट-मार की थी और उन्हें तोड़कर डुबो दिया था। तूफानों की भयंकरता तो और भी बढ़कर थी, क्योंकि डाकू तो कभी-कभी मुंह-तोड़ बदला चुकाकर भाग भी जाते थे, लेकिन तूफान को कौन रोके? उसके वेग से समुद्र की लहरें भयानक रूप धारण कर लेती हैं। जहाजों को भी टूक-टूक कर देने से उनके थपेड़ों के सामने भला इठलाते हुए जहाज की क्या हस्ती? समुद्र-यात्रा जोखिम का काम होता था। इसलिए सुरक्षा के लिए यात्री लोग ईश्वर से बार-बार प्रार्थना करते थे।

'विलबरफिंग' जहाज जब इंग्लैण्ड से चला, तब आकाश बिल्कुल निर्मल था। हवा भी धीमी थी। समुद्र बिल्कुल अनुकूल था। किसी प्रकार का विघ्न नहीं था, इसलिए सारे यात्री और जहाज के चालक निश्चित भाव से यात्रा कर रहे थे। डाकुओं का भी उतना डर नहीं था, क्योंकि 'विलबरफिंग' का कप्तान पहले का फौजी अफसर था। उसे युद्ध का अनुभव था और अपने जहाज पर वह रक्षा के लिए चुने हुए सिपाहियों का एक हथियारबन्द दस्ता भी रखता था, जो जहाज के ऊपरी भाग में बैठकर चारों ओर की टोह लेता रहता था।

लेकिन इस सारी सावधानी के बावजूद, दोपहर होते-होते जहाज के यात्रियों में खलबली मच गई, क्योंकि आकाश का रंग बदल गया था और भयंकर तूफान के लक्षण प्रकट हो गए थे। कप्तान ने इधर-उधर निगाह दौड़ाई, मीलों दूर तक फैला अथाह पानी। कहीं टापू जैसा स्थान नहीं दीख पड़ता था, जहां वह जहाज को रोक कर तूफान से रक्षा करता। इस अथाह समुद्र में तो तूफान के बीच जहाज का डूब जाना निश्चित था। सारे यात्री व्याकुल हो उठे। थोड़ी देर बाद तूफान के झोंके आने लगे। जहाज लड़खड़ा उठा। फिर तो वह भयंकर अंधड़, शोर मचाती हुई ऊंची-ऊंची लहरें और वह भीषण मूसलाधार वर्षा आरम्भ

हुई कि जहाज के कप्तान का भी साहस छूट गया। उसने हर यात्री को सतर्क करवा दिया—अपनी-अपनी जान बचाएं, जहाज खतरे में है।

जहाजों में छोटी-छोटी नावें बंधी रहती हैं, ताकि संकट के समय यात्री उन पर बैठकर भाग सकें। ऐसी नावें 'सिलवरफिश' में भी बंधी थीं। यात्रियों और मल्लाहों में जो सबल और चुस्त थे, वे झटपट कूदकर नावों में बैठ गए और इधर-उधर भागने का प्रयत्न करने लगे; पर ईजियन जैसे लोग, जिनके साथ बीबी-बच्चे थे, जहाज में ही फंसे रह गए। उन्हें निकल भागने का अवसर न मिल पाया। तूफान का रूप और भी उग्र हो उठा था। उसके थपेड़ों ने 'सिलवरफिश' के मस्तूल उखाड़ फेंके; पाल के चिथड़े-चिथड़े उड़ा दिए और ऊपर डेक से लगे हुए लड़की के कितने ही पटरों को तोड़ दिया।

इस प्राणघातक विपत्ति में पड़कर इमीलिया घबरा गई। वह अपने चारों बच्चों को छाती से लगाकर रोने लगी। रक्षा का कोई उपाय सूझ नहीं रहा था। जहाज में केवल इने-गिने यात्री रह गए थे, जो निकल भागने में सर्वथा असमर्थ थे और बैठे अपने भाग्य को रो रहे थे। ईजियन अकेला होता तो वह भी किसी नौका के सहारे अपना बचाव करने का प्रयत्न करता, पर स्त्री-पुत्रों को लेकर वैसा करना संभव न था और उन्हें छोड़कर अकेले भाग जाना भी उसकी आत्मा को स्वीकार न था।

सहसा जहाज बड़े जोर से डगमगाया और एक ओर को झुक गया। ईजियन ने सारी स्थिति समझ ली और पुकार कर बोला, "सावधान! जहाज डूब रहा है। अब अन्तिम समय में बेकार की चीख-पुकार न मचाकर ईश्वर का ध्यान करो! मृत्यु से हमें कोई बचा नहीं सकता, इसलिए रोते हुए नहीं, हंसते हुए मरना चाहिए।"



"ओह, स्वामी !" इमीलिया चिल्लाई, "ईश्वर भी उसी की मदद करता है, जो अपनी मदद आप करता है। कम-से-कम इन बच्चों के लिए तो कुछ करो !"

"क्या करूं, इमीलिया ! मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।" ईजियन ने अपना सिर थाम लिया। वस्तुतः अपनी स्त्री और पुत्रों को डूबते देखने की कल्पना से वह सिहर उठा था।

इमीलिया तो जैसे विक्षिप्त हो गई। वह बुरी तरह से छाती माथा पीट-पीटकर रो रही थी। उसे देखकर बच्चे भी रोने लगे वह दारुण चीत्कार देख-सुनकर ईजियन का हृदय कांप उठा अरे ! मेरे सुख-दुख की एकमात्र संगिनी इमीलिया, मेरे कलेजे के टुकड़े दोनों एण्टीफोलस और ड्रोमियो—सबके सब समुद्र में डूब रहे हैं और मैं निष्क्रिय बैठा हूं ! धिक्कार है मुझे ! मरना ही है तो मरेंगे, लेकिन रक्षा का प्रयत्न तो करना चाहिए। मैंने तो दोनों ड्रोमियो की रक्षा का वचन दिया था।

मन में यह विचार उठते ही ईजियन एक ओर को झपटा मस्तूल का एक बड़ा-सा टुकड़ा, जो शहतीर जैसा लम्बा और सीधा था, डेक के किनारे पड़ा था। ईजियन ने सोचा, यह पानी में डूबेगा नहीं, इसी के सहारे तैर चलना चाहिए। उसने झटपट शहतीर को किनारे सरकाया और उसके एक सिरे पर एण्टीफोलस ए और ड्रोमियो-ए को वांध दिया। इमीलिया उसका आशय समझ गई थी इसलिए हठ करने लगी कि मुझे भी उन्हीं के साथ वांध दो, ताकि मेरा पुत्र मेरी आंखों से दूर न हो सके। वाद विवाद का समय न था। ईजियन ने इमीलिया को भी उसी सिरे से वांध दिया। इसके वाद उसने शहतीर के दूसरे सिरे पर एण्टीफोलस-वी और ड्रोमियो-वी को वांध दिया। चूंकि एक सिरे पर इमीलिया वंधी हुई थी, इसलिए शहतीर का सन्तुलन

लिया। एक बात और भी थी—इमोलिया और पुत्रों के प्रति उसके मन में मोह इतना प्रबल हो उठा था कि उन्हें वह एक पल को भी आंखों से ओझल नहीं होने देना चाहता था। इस प्रकार प्राण-रक्षा का एकमात्र उपाय करके ईजियन ने ईश्वर से प्रार्थना की, "ओ परम पिता! तुम्हारे ही भरोसे हम इस अथाह समुद्र में कूद रहे हैं हम सब की रक्षा करना!" आखिर पैर की ठोकर देकर उसने मस्तूल को पानी में गिरा लिया।

मस्तूल डूबा नहीं। वह लहरों के साथ एक तरह बह चला। 'सिल्वरफिश' के पेंदे में कई बड़ी-बड़ी दरारें हो गई थीं। उसमें फंसे हुए थोड़े-से यात्री, जो किसी भी तरह भाग नहीं सके थे, करुण स्वर में चीत्कार कर रहे थे। गरजता हुआ तूफान समुद्र को मथ रहा था।

चार

समुद्र की धारा का वहाव कोरियन्थ नगर की ओर था। हवा भी उधर ही को चल रही थी, अतः 'सिलवरफिश' का वह खंडित मस्तूल, जिसके दोनों सिरों पर अभागे ईजियन का पूरा परिवार बंधा था, तेजी से उसी ओर को वहता रहा। सन्तुलन वरावर रखने के लिए ईजियन और इमीलिया कभी-कभी हाथों से पानी काटने लगते थे। दूर-दूर तक किसी टापू का पता भी नहीं था, फिर भी प्राणरक्षा की आशा में अन्तिम प्रयास करते वे सब धारा के साथ तैरते-वहते चले जा रहे थे।

कई घण्टे वीत गए। संध्या आ गई। ईजियन परिवार वहता हुआ काफी दूर निकल आया था। यहां तूफान का वेग विल्कुल नहीं था। समुद्र सर्वथा शान्त हो चुका था। लहरें जैसे थककर सोने लगी थीं। आकाश में अस्ताचल की ओर जाता हुआ सूर्य वादलों का पर्दा चीरकर पृथ्वी की ओर झांकने लगा था। चारों ओर लाली फैल गई थी।

कहते हैं, विपत्ति अकेली नहीं आती। ईजियन की आपदाओं का भी इतने ही से अन्त नहीं हुआ था। समुद्र में एक पहाड़ी चट्टान थी, जो पानी में डूवी होने के कारण दिखाई नहीं पड़ रही थी। संयोगवश मस्तूल उसी से जा टकराया और उसके दो खण्ड हो गए। ईजियन और इमीलिया दोनों चीख पड़े। इतनी दूर तक साथ आकर भी वे विछुड़ गए। दोनों टुकड़े अलग-अलग वहने लगे। ईजियन ने वहुत कोशिश की कि किसी तरह

...मीलिया को पकड़ ले, किन्तु सफल नहीं हो सका। इमीलिया ...वाला टुकड़ा हल्का था, अतः वह तेजी के साथ बहने लगा और ईजियन का भाग भारी होने के साथ ही चट्टान से टकरा होने पर दूसरी दिशा में मुड़ गया था, इसलिए वह काफी पीछे रह गया भार अधिक होने के कारण उसकी गति भी मद थी। इस प्रकार विवाह से आज तक—इस दुर्घटनामयी यात्रा तक—साथ रहने वाले ईजियन दम्पत्ति अथाह समुद्र में पथहीन यात्री की भाँति तैरते हुए एक अनिश्चित दिशा की ओर चले जा रहे थे। उनका साथ सदा के लिए छूट गया। पति-पत्नी दोनों विभिन्न दिशाओं की ओर बहने लगे—सर्वथा असमर्थ और असहाय लाचार होकर ईजियन चिल्लाया, "इमीलिया! दुखी न होकर, अपने को ईश्वर की गोद में सौंप दो। इसके अलावा और कोई उपाय नहीं है। वह चाहेगा तो हम-तुम फिर मिल जायेंगे, नहीं तो इसी महासागर में हमारी समाधि बनेगी।"

इमीलिया ने पति के वाक्यों को सुना, तो और कातर हो उठी। पर वह काफी दूर जा चुकी थी, इसलिए ईजियन उसका विलाप सुन नहीं सका। फिर दोनों शान्त हो गए और भाग्य की विडम्बना देखने के लिए विवश होकर, लहरों के अधीन, विभिन्न दिशाओं की ओर बहने लगे।

सूरज डूब चुका था। अंधेरा बढ़ने लगा और इसके साथ ही ईजियन-इमीलिया के बचने की आशा भी क्षीण हो गई थी। तभी ईजियन ने देखा, जिधर इमीलिया बह रही थी, उसी तरफ कोरियन्थ का झंडा लहराए एक मछुआ नाव चली आ रही है। वह घबरा उठा, क्योंकि मछुए बदमाश होते थे। वे मछली का ही नहीं, मनुष्यों का भी शिकार करते थे। दास बनाकर बेच लेना उनका पेशा था और इसके लिए वे ढूंढ-ढूंढकर स्त्री को पकड़ा करते थे। इमीलिया के पकड़े जाने की आशं-...

ईजियन कांप उठा। दुर्भाग्य के इस भयंकर रूप को देखकर वह भय-विह्वल स्वर में चिल्ला उठा, ओ विघाता !" लेकिन विघाता कुछ बोला नहीं। पीछे खड़ा बड़ी क्रूरता से मुस्कराता रहा।

अब तक कोरियन्थ की नौका इमीलिया के पास पहुँच चुकी थी। एक स्त्री को बहते देखकर मछुए बहुत ही आनंदित हुए। उन्होंने उसे झटपट पानी से निकालकर नाव में बिठा लिया और तीव्रगति से कोरियन्थ की ओर भाग चले। ईजियन ने पत्नी का यह दु:खद अपहरण देखा, तो मारे शोक के पागल हो गया। उसकी बुद्धि कुंठित हो गई। वह न रो सका, न चिल्ला सका, सर्वथा निरुपाय, शव की भाँति बहता रहा। उसे जीवन के प्रति न कोई आशा रह गई थी, न मोह। मन ही मन वह सोच रहा था—अब क्या देखने के लिए बच रहा हूँ ? सब कुछ तो लुट गया है, समुद्र में डूब कर मर क्यों नहीं जाता ?

उसने आत्म हत्या के विचार से डूबने का प्रयास भी किया, पर मस्तूल से बंधा होने के कारण डुबकी लगाना संभव न था। इसीलिए लाचार होकर वह जीवन की इच्छा न रहते हुए भी पूर्ववत बहता रहा कोरियन्थ के मछुओं वाली नौका दृष्टि से ओझल हो गई। पत्नी, एक पुत्र और एक पालित सेवक को इस प्रकार खोकर ईजियन की आत्मा विकल हो उठी। उसने एक गहरी साँस खींची और अपने को भाग्य की गोद में सौंप देने के विचार से तैरना बंद करके हाथ-पैर सीधे फैला दिए। फिर भी वह डूबा नहीं; मस्तूल के सहारे उतराया रहा। दोनों बच्चे एण्टीफोलस और ड्रोमियो भी लक्ष्य हीन उसी के साथ बहते रहे।

एकाएक मस्तूल किसी चीज से टकराया। ईजियन चौंक उठा। उसने समझा—शायद अब कोई चट्टान अपनी क्रूरता से हम तीनों को भी अलग करना चाहती है। उसका मोह जाग

उठा। उसने दोनों बच्चों को कसकर पकड़ लिया और तैरने का प्रयत्न करने लगा। पर वह टक्कर चट्टान की नहीं, एक छोटे-से जहाज की थी। ईजियन ने झंडे का चिह्न देखकर पहचाना—यह तो इपीडैरस का जहाज है, उसने मल्लाहों को रक्षा के लिए पुकारा। आवाज सुनकर मल्लाहों ने नीचे झांका। उन्होंने ईजियन और दोनों बच्चों को निकाल लिया और कप्तान के पास ले गए। संयोगवश कप्तान ईजियन को पहचानता था। उन्होंने बड़ी सहानुभूति और सम्मान के साथ उसके कपड़े बदलवाए, बच्चों को संभाला और डाक्टर बुलाकर उनकी देखभाल करने के लिए कह दिया।

थोड़ी-सी ब्राण्डी पीकर जब ईजियन कुछ सशक्त हुआ, तो उसने अपनी विपत्ति-कथा कप्तान को सुनाई। कप्तान व्यग्र हो उठा, पर अब तक अँधेरा पूर्णरूप से फैल गया था। देर हो जाने के कारण कोरियन्थ वाली नौका काफी दूर निकल गई होगी, इसलिए उसको पकड़ सकना सम्भव न था। उसने कहा, "मित्र ईजियन! इस समय तो उस नौका को ढूंढना सम्भव नहीं है, हां भविष्य में यदि कहीं वे मछुवे दिखाई पड़े तो मैं अवश्य गिरफ्तार करूंगा। मेरे विचार से अब तुम कहीं न जाकर मेरे साथ इसी जहाज पर रहो। देश-विदेश का भ्रमण करते रहने से तुम्हारा चित्त भी हल्का हो जाएगा और संभव है, कहीं तुम्हारे पुत्र और पत्नी से मिलन हो ही जाए।"

निराशा के कारण ईजियन इतना विरक्त हो चुका था कि उसने अधिक बातचीत नहीं की। वह थकान से और भी शिथिल हो गया था। कहने कहा, "मित्र, अब मैं अपनी ओर से कोई प्रयत्न नहीं करना चाहता। जो ईश्वर की इच्छा होगी, वही होगा।"

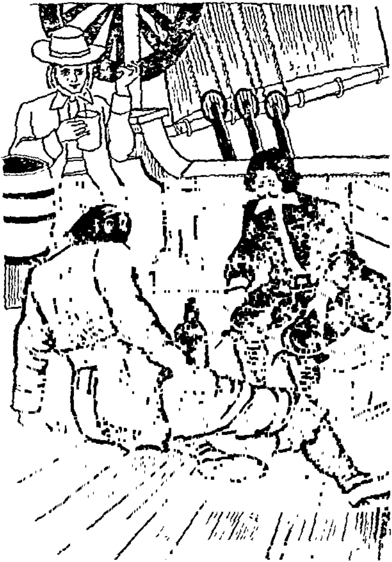
कप्तान ने उसकी वेदनाओं को कुरेदना

उसने अपने केविन के पास ही एक कमरे में उसके रहने की व्यवस्था करा दी। तन मन से क्लान्त ईजियन वहाँ पहुँचकर विस्तर पर लेटा तो सारी रात अचेत पड़ा रहा। स्वप्न में इमीलिया ने उसे कई वार पुकारा, पर वह इतना अशक्त और अचेत था कि करवट तक नहीं वदल सका। वच्चों को जहाज के डाक्टर ने अपने पास ही रख लिया था। उसके उपचार से वे भी सशक्त हो गए थे और गरम दूध पीकर सारी रात गहरी नींद में सोते रहे।

इपीडैरस पहुंचकर ईजियन ने कप्तान से विदा ली और अपने दोनों वच्चों सहित राजधानी की ओर चल पड़ा। उसका विचार था कि जीवन के शेष दिन किसी धार्मिक संस्था या मठ में रहकर विता दिए जाएं। भाग्य के आगे मनुष्य की पराजय वह अपनी आँखोंसे देख चुका था। जीवन के प्रति किसी प्रकार का उद्योग करने का उत्साह उसमें न रह गया था।

विपत्तियों ने ईजियन को समय से पहले ही वूढ़ाकर दिया। उसके मन में अव राग-रंग और हास-विलास की जरा भी उत्कण्ठा नहीं रही। चंचलता उसके स्वभाव से कोसों दूर भाग गई थी। अव वह एक धर्मभीरू, भाग्यवादी और अतिसंतोषी व्यक्ति वन गया था। दोनों वच्चों—एण्टीफोलस-वी और रोमियो-वी को भी उसने निरन्तर ऐसी ही शिक्षा दी कि वे सच्चरित्र, दयालु, ईमानदार और ईश्वर-भक्त वनें। वच्चों को पढ़ाने के लिए उसने अच्छे से अच्छे शिक्षक रखे और सदैव सजग रहा कि वच्चे भूलकर भी गलत राह पर न चलने पाएं।

धीरे-धीरे अट्ठारह वर्ष वीत गए। ईजियन वृद्ध हो गया, पर उसका शरीर सदैव नीरोग रहा। अव तक उसका मन भी-कुछ सवल हो गया था। अव उसके दोनों वच्चे वीस वर्ष के सुन्दर,



स्वस्थ और शिक्षित नवयुवक थे। ये अट्ठारह वर्ष ईजियन ने केवल इपीडैरस में ही नहीं विताए थे, वह लगभग सारे यूरोप और पश्चिमी एशिया का भ्रमण करता रहा, फिर भी बच्चों की शिक्षा की ओर वह सदैव सजग रहा। जहां भी रहा, उन्हें पढ़ाता रहा।

जीविका के लिए उसने रत्नों का व्यापार आरम्भ कर दिया था और इसी सिलसिले में देश-विदेश घूमा करता था। इस भ्रमण के पीछे एक और प्रेरणा भी थी—शायद कहीं मेरी इमीलिया और दोनों पुत्र मिल ही जाएं। हृदय में आशा की एक किरण लेकर वह विशेष रूप से यात्राएं करता रहा। यद्यपि इमीलिया और उन दोनों बच्चों—ए—का कहीं पता नहीं चल सका था, फिर भी ईजियन निराश न हुआ। वह व्यापार के लिए दूर-दर के प्रदेशों की यात्रा करता ही रहता था। दोनों पुत्रों—बी—को देखकर उसका घाव भर जाता और वह संतुष्ट होकर सोचने लगता था—ईश्वर ने जितनी कृपा मुझ पर की है, यही काफी है।

उन दिनों ईजियन रोम में रहता था। एक संध्या को समुद्री यात्रा की विपत्तियों का वर्णन करते समय उसने दोनों पुत्रों को आपवीती सुना दी। सुनकर वे विचलित हो उठे। मां और दो भाइयों को मछुओं द्वारा बन्दी वनाए जाने की दुखद घटना उन्हें दग्ध और उत्तेजित करने लगी। एण्टीफोलस ने कहा, "पिता जी! मुझे आज्ञा दीजिए। मैं मां और भाइयों की खोज में जाऊंगा।

वलपूर्वक छीनी जा रही मणि के लिए व्याकुल नाग की भांति झपट कर ईजियन ने उसे छाती से लगा लिया और वोला, "यह क्या कह रहे हो, वेटा! इतनी भयंकर आपत्तियां सह कर भी मैं जो आज तक जीवित रहा हूं, जानते हो किसके सहारे?

एकमात्र तुम्हारे सहारे। और आज तुम भी मुझे छोड़ कर विदेश जाने की बात कह रहे हो! सोचो, मैं कैसे रह सकूँगा?" उसका कण्ठ अवरुद्ध हो गया और आंखों में आंसू भर आए।

मोह के मूर्तिमान स्वरूप अपने वृद्ध पिता का कातर स्वर सुन कर और उसकी आंखों में ममता के आंसू देखकर एण्टीफोलस का बालहठ द्रवित हो गया, पर कल्पना में उसने भाइयों एवं अपनी मां का चित्र देखा तो फिर अस्थिर हो उठा। माता-पिता का मोह उसे दो विपरीत दिशाओं की ओर खींचने लगा। पिता के पास वह बीस वर्षों से रह रहा था, पर मां की तो उसे याद भी न थी, अतः जिज्ञासा और कौतूहल के भावों ने उसे मां की ओर विशेष प्रेरित किया। उसने ईजियन की छाती से लिपटते हुए कहा, "पिता जी मैं केवल छः महीने के लिए आपसे अलग हो रहा हूं, इसके बाद तुरन्त लौट आऊंगा।"

"आह, छः महीने! तुम्हारे बिना तो मेरे लिए छः मिनट भी बहुत बड़े होते हैं। बेटा! मैं इतना समय कैसे बिताऊंगा?" ईजियन बोला।

"आप अधीर न हों, पिता जी! मैं पत्र भेजता रहूंगा और छः महीने बाद तो अवश्य ही लौट आऊंगा, चाहे मां को ढूंढ सकूं या नहीं।"

ईजियन दुविधा में पड़ गया। एक ओर तो रहे-सहे एकमात्र पुत्र का वियोग होने जा रहा था, दूसरी ओर अट्ठारह वर्ष पूर्व बिछुड़ी हुई पत्नी तथा अन्य पुत्रों से मिलने की आशा अपना मोहक रूप दिखा रही थी। वह कुछ निश्चय न कर सका, चुपचाप बैठा रहा।

ड्रोमियो-बी ने कहा, "पिता जी! हम ईश्वर को साक्षी देकर प्रतिज्ञा करते हैं कि आपको एक दिन के लिए भी नहीं भूलेंगे और जितनी जल्दी हो सकेगा, आपकी सेवा में वापस

आ जाएंगे।"

दोनों बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहे। अन्ततः ईजियन ने उन्हें भ्रमण की आज्ञा दी। उसने सोचा दोनों वस्यक हो चुके हैं। युवावस्था का जोश बड़ा प्रबल होता है। अगर कहीं ये बिना मुझे बताए ही चले गए तो और भी चिंता होगी, इसलिए रोकना ठीक नहीं है।

अगले दिन यात्रा-सम्बन्धी अनेक सुविधाएं जुटाकर ईजियन ने एण्टीफोलस और ड्रोमियो-बी को विदा कर दिया। उसने उन्हें काफी पढ़ाया-लिखाया था, उनका सामान्य ज्ञान भी बढ़ा दिया था। व्यापार, युद्ध-कला तथा कानून भी पढ़ाए थे, फिर भी संतान के प्रति माता-पिता का जो मोह होता है, उसके प्रभाव से वह अपने को बचा न सका।

जब दोनों बी यात्रा के लिए प्रस्थान कर गए, तो ईजियन को अपना अकेलापन खटका। परिवार का मोह उसे व्याकुल करने लगा। उसे बार-बार यही आशंका त्रास दे रही थी—कहीं मेरे बच्चे किसी संकट में न पड़ जाएं। कहीं उन दो पुत्रों की आशा में इन दो को भी तो नहीं गंवा बैठूंगा? पत्नी के लोभ में कहीं पुत्रों से भी तो वंचित न होना पड़ेगा?

अन्ततः उसने बाइबिल की शरण ली और उस धर्म-ग्रन्थ के सहारे वह अपनी मनोवेदना को भुलाने का भरसक प्रयास करने लगा।

एक-एक दिन करके छः महीने बीत गए, पर दोनों बी लौटे नहीं। यद्यपि उनके पत्र ईजियन के पास आते रहे, पर उनमें दोनों ए और इमीलिया के विषय में कोई आशाजनक संकेत नहीं रहता था। ईजियन ने दोनों बी को वापस लौट आने के लिए लिखा, पर धुन के पक्के और माता तथा भाई के प्रति मोह से ग्रस्त उन दोनों ने लौटने की बात स्वीकार न की और सदैव

विनम्रतापूर्वक पिता को पत्र लिखकर आगे भी कुछ समय तक का अवकाश मांगते रहे।

एक बात और थी—नैपिल्स में किसी ज्योतिषी ने उन्हें बताया था कि तुम्हारी यात्रा सफल होगी और कुछ ही वर्षों बाद तुम्हारे परिवार के सारे सदस्य तुम्हें स्वतः ही प्राप्त हो जाएंगे। ज्योतिषी की इस भविष्यवाणी ने उन्हें और उत्साहित कर दिया था और वे पिता को पत्रों द्वारा संतुष्ट करते हुए निरन्तर देश-विदेश घूमते रहे। यहां तक कि कई वर्ष बीत गए माता तथा भाइयों का कहीं पता न चल सका। फिर भी आशा का सम्बल उन्हें प्राप्त था, अतः वे लगातार अपने प्रयत्न में जुटे रहे। इंग्लैंड से लेकर इटली तक और स्पेन से लेकर रूस तक उन्होंने अनेक बार भ्रमण किया। विशेषरूप से बन्दरगाहों वाले नगरों में जाते थे, क्योंकि ऐसे स्थानों पर ही कोरियन्थ के उन मछुओं के मिलने की अधिक सम्भावना थी।

पांच

(नों वी के चले जाने पर ईजियन का मन उचट गया। अव वह नाममात्र का व्यापारी रह गया था। उसका अधिकांश मय धर्म-ग्रन्थों के पढ़ने में या पादरियों से धर्म-चर्चा करने में ी वीतता। व्यापार वह केवल इतना ही करता कि अपना निर्वाह कर सके।

एक रात ईजियन गहरी निद्रा में सो रहा था। उसे स्वप्न दिखाई पड़ा कि सारा नगर हरे रंग से प्रकाशित है। वह अपने वरामदे में वैठा है। तभी एक देवदूत आता है और उससे कहता है—'ईजियन ! मेरे साथ चलो तो तुम्हारे स्त्री-पुत्रों से भेंट करा दूं।' इसके वाद ईजियन का कोई उत्तर सुने विना ही वह उसे अपनी पीठ पर विठाकर उड़ जाता है और वहुत दूर, किसी चहल-पहल भरे नगर में ले जाकर उतार देता है। इसके वाद वह लुप्त हो जाता है और ईजियन इधर-उधर भटकने लगता है। सहसा काले रंग के तीन-चार भयानक व्यक्ति आकर उसे वांध लेते हैं और वध-भूमि की ओर ले जाते हैं। वह कातर स्वर में ईश्वर को, अपने पुत्रों को, सेवकों को और पत्नी को पुकारने लगता है। ठीक तभी, आकाश में विजली कौंधती है और न जाने कहां से उसकी पत्नी इमीलिया आकर सामने खड़ी हो जाती है—वही रूप, वही रंग, वही वाणी और वही व्य हार। जैसे ही ईजियन उसे अपनी भुजाओं में वांधने को आ वढ़ता है, उसके दोनों पुत्र एण्टीफोलस भी पिताजी, पिताजी

कहते हुए सामने आ खड़े होते है। वे भी पूर्ण स्वस्थ, अति प्रियदर्शी और तेजस्वी युवक प्रतीत हो रहे है। उनके साथ ही दोनों ड्रोमियो भी आ जाते है और ईजियन के पैरों से लिपट कर कहने लगते हैं, 'मेरे स्वामी ! मेरे पिता ! इन वधिकों के साथ तुम कहां जा रहे हो? हम तुम्हें नही जाने देंगे, प्राण देकर भी तुम्हारी रक्षा करेंगे।' साथ ही वे तलवार खींच लेते हैं। यह देखते ही वधिक भाग जाते है। प्रकाश और तीव्र हो गया है। इमीलिया ईजियन की भुजाओं मे बंध गई है। दोनों एण्टीफोलस भी लिपटे हुए हैं और दोनों ड्रोमियो उसके पैरों पर पड़े कह रहे हैं, 'पिता जी ! अब हमे कभी अपने से दूर न करना ! तुम्ही तो हमारे एकमात्र स्वामी, पिता और धर्मगुरु हो।'

सहसा बड़े जोरसे धडाके की आवाज आई और वृद्ध ईजियन का स्वप्न टूट गया। वह चौंक कर उठ बैठा।

सवेरा हो गया। धूप फैल चुकी थी और कामकाजी लोग निकल पड़े थे। हर्ष और विषाद की स्मृतियों को जगाने वाले उस मधुर स्वप्न पर विचार करता हुआ और अनेक प्रकार की संभव-असंभव घटनाओं की कल्पना करता हुआ ईजियन उठा और नित्य कर्म मे व्यस्त हो गया।

आशा बडी बलवती होती है। उससे प्रेरित होकर मनुष्य असमव को समव कर दिखाने के प्रयत्न मे जुट जाता है। उस समय उसके तन-मन की शक्ति असाधारण रूप से बढ़ जाती है और वह सामर्थ्य से बाहर के कार्यों को करने के लिए भी हसतेहंसते कटिबद्ध हो जाता है। ऐसा ही कुछ ईजियन के साथ भी हुआ। उपर्युक्त स्वप्न ने उसे स्त्री-पुत्रों के प्रति फिर से अनुरक्त कर दिया। उसकी आशा पल्लवित हो उठी। पौरुष जाग पड़ा और उस वृद्धावस्था में भी, जबकि इधर-उधर भटकने की उसकी शक्ति क्षीण हो गई थी, वह एक बार फिर से यात्रा

उद्यत हो गया। उसने एण्टीफोलस-बी को भी सूचित कर दिया कि मैं भी तुम लोगों की खोज में निकल रहा हूं। देखना है कि भाग्य अब हमें कहां और कब परस्पर मिलने देता है। उसने अपनी सम्पत्ति एकत्र की, यात्रा का समान जुटाया और देवताओं का ध्यान करके अगली संध्या को रवाना होने वाले एक जहाज से यात्रा की तैयारी करने लगा।

वृद्ध ईजियन ने पत्नी और पुत्रों की आशा में दूर-दूर तक भ्रमण किया। रोम, नैपिल्स, स्पार्टा, एथेन्स और सार्डीनिया आदि में उसने महीनों तक धूल छानी। यूनान में उसने पांच वर्ष बिता दिए। ईरान की सीमा तक हो आया, पर अपने प्रिय-जनों का कहीं पता न मिल सका। एण्टीफोलस-बी के पत्र भी इन सात वर्षों में उसे नहीं मिल सके थे, क्योंकि वह निरन्तर भ्रमण करता रहता था। उन दिनों आज की जैसी डाक-व्यवस्था तो थी नहीं।

बहुत दिनों तक इधर-उधर भटकने के बाद ईजियन ने स्व-देश लौटने का निश्चय किया। पत्नी और पुत्रों के मिलने की कोई आशा न रह गई थी। उसने सोचा, इस प्रकार मृग-मरी-चिका के पीछे भटकना ठीक नहीं है। अब सायरेक्यूसा चलकर वहीं जीवन के शेष दिन ईश्वर की आराधना में बिताऊं ताकि मातृभूमि की गोद में मरने का सौभाग्य तो पा सकूं। ऐसा न हो कि इन यात्राओं में भटकता हुआ कहीं समुद्र की लहरों या किसी पहाड़ी खड्ड में मर जाऊं, और तब अन्तिम समय के दुख से पीड़ित होकर मेरी आत्मा को प्रेत के रूप में इधर-उधर भटकना पड़े। उसने दूसरे ही दिन मातृभूमि के लिए प्रस्थान कर दिया।

ईजियन जिस जहाज से सायरेक्यूसा के लिए चला, उसे इफोसस होकर जाना था। इफीसस में उस जहाज ने कई घन्टे लगा दिए, क्योंकि उस में कुछ खराबी आ गई थी और बिना

मरम्मत किए, उस पर यात्रा सुरक्षित नहीं रह गई थी। ईजियन के मन में नगर घूमने की लालसा जाग उठी। कई वर्षों से वह इफीसस नहीं गया था, इसलिए अन्तर्मन की प्रेरणानुसार वह झटपट तैयार हो गया और कप्तान को सूचना देकर नगर की ओर चल पड़ा।

इफीसस का शासक उन दिनों सोलिनस ड्यूक था। यों वह बहुत ही सभ्य और दयालु था, पर स्वाभिमान की मात्रा उसमें बहुत थी। अपने विरोधी को क्षमा करना वह नहीं जानता था। 'ईंट का जवाब पत्थर से देना' उसका सिद्धान्त था। चूंकि इफीसस पर पड़ोसी देश दांत लगाए रहते थे, इसलिए सोलिनस अपने देश की राजनीति और शासन-प्रबन्ध में और भी कठोर था। इसी कठोरता के कारण उसने सायरेक्यूसा वासियों के लिए इफीसस मे प्रवेश पर रोक लगा दी थी। उससे स्पष्ट रूप से घोषित करा दिया था कि यदि सायरेक्यूसा का कोई भी नागरिक इफीसस की सड़कों पर दिखाई पड़ा, तो उसे प्राणदण्ड दिया जाएगा और यह दण्ड तभी क्षमा किया जा सकेगा, जबकि वह एक हज़ार मार्क इफीसस के खजाने में जमा कर दे। ड्यूक द्वारा की गई उस क्रूर घोषणा के पीछे भी एक घटना थी।

एक बार इफीसस का एक जहाज समुद्री तूफान मे फंसकर डूब गया था। उसके अधिकांश यात्री मर गए थे, पर कुछ लोग एक नाव म वैठकर बच निकले थे, जो भटकते हुए सायरेक्यूसा के तट पर जा लगे। समुद्र-तट के नियमानुसार वे यात्री, किनारे के सिपाहियों द्वारा पकड़कर दरबार मे ले जाए गए। सायरेक्यूसा का ड्यूक दुष्ट प्रकृति का था। उसने उन यात्रियों की विपत्ति-कथा की हंसी उड़ाते हुए कहा, 'या तो इसमें से प्रत्येक यात्री एक-एक सोने की ईंट दे, या फांसी पर झूले।"

बेचारे यात्रियों के पास कुछ भी न था, वे सो

देते ? परिणाम यह हुआ कि सायरेक्यूसा के ड्यूक की राक्षसी आज्ञा का पालन करने के लिए सारे यात्री फांसी के तख्ते पर चढ़ने को विवश हो हुए। अंतिम क्षण तक ड्यूक उसी क्रूरतापूर्ण मुस्कान से उन्हें देखता रहा और वे बेचारे गले में रस्सी बांधकर सदा के लिए शांत हो गए।

यह समाचार इफीसस पहुंचा तो वहां के दरबारी उत्तेजित हो उठे। कुछ लोग तो सायरेक्यूसा पर आक्रमण करने का इरादा भी करने लगे, पर दूरदर्शी ड्यूक सोलिनस ने उन्हें किसी प्रकार शान्त किया और सायरेक्यूसा के ड्यूक को अपनी उक्त घोषणा सहित यह सूचना भेज दी कि आज से हमारे आपके सम्बन्ध टूट गए हैं। अवसर पाने पर हम सायरेक्यूसा के दरबार से भीअपने निरीह देशवासियों की हत्या का बदला अवश्य लेंगे।

ईजियन ने ज्यों ही नगर सीमा में प्रवेश किया, इफीसस के सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया, क्योंकि अपनी वेशभूषा से वह विदेशी के रूप में सहज ही पहचाना जाता था। सिपाही उसे ड्यूक के पास ले चले—आज देखा जाएगा कि खून के बदले खून कैसा होता है !

ईजियन ने अपनी निर्दोषिता प्रकट करते हुए सिपाहियों से बड़ी प्रार्थना की कि मुझे यहां के नियम मालूम नहीं थे, लेकिन सिपाहियों ने उसकी एक भी न सुनी।

समुद्र-तट पर खड़े कप्तान को जब इस घटना का पता चला तो वह मारे डर के अपने यात्रियों को समेटकर झटपट जहाज लेकर भाग निकला, क्योंकि ड्यूक की इस नई आज्ञा का उसे भी पता नहीं था। उसने सोचा, आगे किसी निर्जन टापू या तट पर ठहरकर मरम्मत कर ली जाएगी, यहाँ तो सब के सब मारे जाएंगे।



सिपाहियों ने जिस समय वन्दी ईजियन को लेकर दरबार
वेश किया, ड्यूक मौजूद था और लगभग सारे सभासद भी
स्थित थे। सिपाहियों के सरदार ने आगे बढ़कर ड्यूक को
र भुकाया और बोला, "महाराज! यह सायरेक्यूसा का
पारी है, जिसे आपके आदेशानुसार बंदी बनाया गया है।
व जैसा उचित हो, वैसा दण्ड दिया जाए।"

ड्यूक ने देखा—एक अति दुर्बल और कांतिहीन बूढ़ा थरथर
ांपता हुआ सामने खड़ा है। भय और चिन्ता की रेखाओं से
चेहरा विकृत हो रहा है और सूनी-सूनी आंखें कुछ खोज-सी
रही हैं।

सोलिनस की सज्जनता ने कहा—यह दीन दरिद्र प्राणी
सर्वथा निर्दोष है, इसे छोड़ दो। तभी उसकी प्रतिहिंसा-भावना
और शासक-प्रवृत्ति ने झकझोरा—ऐसी मानसिक दुर्बलता से
कहीं शासन चलता है? दया का क्या काम? इस अभागे को
घोषणानुसार मृत्युदण्ड देकर झटपट उस निरपराध देशवासियों
की मृत्यु का बदला क्यों नहीं लेते, जो सायरेक्यूसा के वधस्थल
पर, वहाँ से ड्यूक की दुष्टता और क्रूरता के फंदे में पड़कर
मारे गए हैं।

इस मनोमंथन ने सोलिनस की मुखमुद्रा कठोर कर दी।
उसने दृढ़ गम्भीर स्वर में पूछा, "बूढ़े तुम्हारा क्या नाम है?
कहां से आए हो?'

"महाराज!" कांपती हुई आवाज में ईजियन ने हाथ
जोड़कर उत्तर दिया, मैं सायरेक्यूसा का निवासी हूं मेरा नाम
ईजियन है।"

"तुम्हारा पेशा क्या है?" सोलिनस ने फिर प्रश्न किया।

"अब तो दर-दर भटकना ही मेरा पेशा रह गया है
श्रीमन!" ईजियन ने लम्बी सांस खींची।

ईजियन की उसांस में दबी वेदना का आभास पाकर ड्यूक की दयालुता सजग हो गई। उसे निश्चय हो गया कि अवश्य ही यह कोई विपत्तिग्रस्त मनुष्य है। उसने पूछा, "लेकिन इस तरह दर-दर भटकने से पहले तुम क्या करते थे?"

"तब तो महाराज, मैं व्यापारी था अनेक प्रकार की वस्तुएं जहाज द्वारा दूर-दूर देशों तक भेजा करता था। इपीडेमियम में मेरा कारोबार प्रसिद्ध था।"

"क्या अब यह नहीं रहा।"

"नहीं श्रीमन्! कुछ भी नहीं रह गया। अब तो मैं राह का भिखारी हूं। मेरा धन-परिवार सब कुछ लुट चुका है।"

सोलिनस ने क्षण-भर कुछ सोचा, फिर कहा, "यों तो तुम्हारी दशा पर द्रवित हू, पर अपने राज्य का नियम और अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने के लिए तुम्हें दण्ड अवश्य दूंगा। आपने अपराध किया है।"

ईजियन के लिए यह चोट नई और कष्टप्रद थी। उसने आकाश की ओर हाथ उठाकर पुकारा, "ओ ईश्वर तू कहां सो रहा है? अभागे ईजियन पर दया नही करता?"

सोलिनस ने उसी दृढ़ता से कहा, "इफीसस में सायरेक्यूसा से आया हुआ कोई भी व्यक्ति मृत्यु दण्ड पाएगा, क्या मेरी यह घोषणा तुमने नही सुनी थी? अपने देशवासियों की मृत्यु का बदला लेने के लिए मैं तुम्हें दण्ड अवश्य दूंगा, क्योंकि तुम्हारे ड्यूक के अत्याचार ने मुझे ऐसा करने के लिए विवश कर दिया है। जाओ, जल्लाद तुम्हें वधभूमि ले जायेंगे।"

ईजियन की आंखों के आगे अंधेरा छा गया। उसे मृत्यु का भय उतना नहीं था, जितना अपने भाग्य पर पश्चाताप हो रहा था। फिर भी उसने सोचा—चलो अच्छा है। मृत्यु के द्वारा भविष्य के सारे कष्टों से मुक्ति मिल जाएगी। जीवित

र न जाने कब तक इस प्रकार आपदाओं में भटकना पड़ता कहा, "महाराज ! आपकी आज्ञा मुझे स्वीकार है। मृत्यु रे लिए शान्तिदायक होगी मैं वधभूमि जाने के लिए तैयार ' फिर एक गहरी सांस लेकर वह जल्लादों की ओर बढ़ा।

सोलिनस की सज्जनता ने उसे मन ही मन धिक्कारा—म्हारा यह हृदय कितना कठोर और राक्षसी है, यह तो ोचो ! क्या इस प्रकार तुम अपने उन नागरिकों को, जो सायरेक्यूसा में मारे गए थे, जीवित कर सकोगे? इस निर-पराध बूढे का चेहरा भयंकर आपदाओं की कहानी कह रहा है। इस पर तो अवश्य ही दया करनी चाहिए। राजा के पास दण्ड ही नहीं क्षमा भी होनी चाहिए।

ड्यूक ने ईजियन को रोका, "सुनो ईजियन ! क्या तुम एक हजार मार्क जमा करके अपनी प्राण रक्षा नहीं कर सकते ?"

ईजियन ने विपत्ति के साथ कहा, "मेरे पास सौ मार्क भी नहीं हैं, श्रीमान ! और न मैं जीवित ही रहना चाहता हूं।"

'क्या यहाँ तुम्हारा कोई ऐसा परिचित है, जो तुम्हारे लिए इतना धन दे सके ? यदि ऐसा हो तो तुम दण्ड से बच सकते हो।

"नहीं, श्रीमान् !"

"तब तो तुम्हें दण्ड अवश्य दिया जाएगा, फिर भी तुम्हारी फांसी दिन भर के लिए रोके देता हूं। तुम्हें शाम को, जबकि सूरज डूब रहा होगा, मृत्युदण्ड दिया जाएगा। मैं नगर घोषणा कराए देता हूं कि इस बीच यदि कोई तुम्हारा मि परिचित चाहे, तो दरबार में एक हजार मार्क जमा कराके छुड़ा ले। संभव है, कोई जान-पहचान वाला निकल ही आ क्योंकि यहां के बहुत से व्यक्ति इपीडैमियम में रह चुके हैं

ईजियन सिर झुकाए चुपचाप खड़ा रहा।

"मैं पूछता हूं।" ड्यूक ने प्रश्न किया, "क्या तुम मुझे

विषय में कुछ बता सकोगे ? तुम्हारा चेहरा कह रहा है कि तुमने भयंकर विपदाएं उठाई हैं। मैं तुम्हारी कहानी सुनना चाहता हूं।"

और आधे घण्टे बाद जब ईजियन ने संक्षेप में अपनी सारी कथा सुनकर लम्बी सांस खींची, तो स्तब्ध बैठे ड्यूक और दरबारियों का स्वप्न भंग हुआ। जैसे नींद से जागकर ड्यूक ने कहा, "अच्छा, इस समय जल्लादों के साथ जाओ। शाम को मैं स्वयं वधभूमि पर आऊंगा।" और उठकर चला गया। सैनिकों ने ईजियन की रस्सी संभाली और उसे खींचते हुए वधभूमि की ओर चल पड़े।

कोरियन्थ के मछुओं ने समुद्र में बह रही इमीलिया और उसके बच्चों को जब पकड़ा, तो यह सोचकर कि इन्हें दूर किसी देश में बेचने से काफी रकम मिलेगी, तेजी से एक ओर को भाग चले। भाग्य उनके अनुकूल था, इसलिए कोई विघ्न भी नहीं पड़ा और वे सारी रात नाव तैराते रहे। पर दूसरे दिन सवेरे उनकी प्रसन्नता जाती रही, क्योंकि सामने से इपीडैमियम का एक छोटा-सा जहाज आ रहा था। उन्होंने बचकर एक ओर से निकल जाने का विचार किया।

लेकिन जहाज के कप्तान ने नौका पर शहतीर में बंधी हुई एक स्त्री तथा दो बच्चों को देख लिया था। उसे संदेह हो गया कि ये लोग डाकू हैं। उसने तुरन्त खतरे का बिगुल बजवाया अपने मल्लाहों को हुक्म दिया, "उस नाव को पकड़ लो!"

मल्लाहों ने जहाज का रुख उधर ही कर दिया। अब कोरियन्थ के मछुओं के सामने दो ही रास्ते थे—या तो लड़ें, या भागें। अन्ततः उन्होंने भागना ही उचित समझा, क्योंकि जहाज पर सैनिक और मल्लाह अधिक थे। वे मुकाबला करने में असमर्थ थे। नाव उल्टी दिशा की ओर भागी। जहाज ने उसका पीछा किया।

बड़ी दूर तक यह दौड़ होती रही, लेकिन जहाज नौका को न पा सका क्योंकि नौका छोटी और हल्की थी। उसकी जैसी तीव्र-गति से भारी-भरकम जहाज का तैरना संभव न था।

धीरे-धीरे बीच की दूरी बढ़ने लगी। नौका काफी आगे निकल गई और जहाज पिछड़ गया।

कप्तान झल्ला उठा। मछुओं की चुनौती उसे चुभ गई। उसने अपने दस मल्लाहों को आज्ञा दी। "तुम लोग एक छोटी नाव लेकर उन बदमाशों का पीछा करो और उसमें बंधी पड़ी स्त्री को उसके बच्चों सहित छुड़ा लाओ। हम भी पीछे-पीछे आते हैं।"

मल्लाह आज्ञाकारी और फुर्तीले थे। उन्होंने जहाज पर लदी हुई एक हल्की नाव उतारी और तेजी से मछुओं की ओर झपट चले।

अब मछुओं को पकड़े जाने की शंका हुई, क्योंकि एक तो थके होने के कारण उनकी गति धीमी हो गई थी, दूसरे शत्रु ने जहाज छोड़कर नौका द्वारा उनका पीछा करना आरम्भ कर दिया था। फिर भी उन्होंने धीरज नहीं छोड़ा, लगातार नाव भगाते रहे।

इपीडैमियम के मल्लाह भी दूने उत्साह से उनका पीछा कर रहे थे अन्ततः लगभग दो मील दूर जाकर उन्होंने कोरिन्थ वालों को दबोच ही लिया और उनकी नाव में जोर से टक्कर मारी।

मछुए दुस्साहसी थे। अपने भाले-बल्लम सम्भालकर उन्होंने मल्लाहों पर आक्रमण कर दिया। दोनों दल गुथ गए। नावें परस्पर टक्कर मारने लगीं और विकट मारकाट शुरू हो गई। दोनों ही दल एक-दूसरे को डुबो देने या मार डालने को सन्नद्ध थे। वे प्राणों का मोह छोड़कर लड़ रहे थे। इस बीच किसी मल्लाह ने इमीलिया का बन्धन काट दिया और उसे अपनी नाव पर बिठा लिया। यह देखकर मछुए और भी क्रोधित हो उठे। वे लगातार मल्लाहों की नौका को उलटने का प्रयत्न करने

लगे। अब तक कई मल्लाह और मछुए घायल हो गए थे, फिर भी उनका साहस नहीं छूटा था। दोनों दल अपनी-अपनी विजय के लिए जान पर खेलकर लड़ रहे थे।

थोड़ी देर में मौका पाकर दो मल्लाह मछुओं वाली नाव पर कूद गए और शहतीर से बंधे हुए दोनों बच्चों को खोलने का प्रयास करने लगे। इसी बीच मछुओं ने उनकी नाव में फिर एक टक्कर मारी। मल्लाह की नाव छोटी और हल्की थी। धक्का लगते ही अपनी वह सवारियों सहित, जिनमें इमीलिया भी थी, उलट गई और उसके मल्लाह पानी में जा गिरे।

बच्चों को खोल रहे दोनों मल्लाहों ने अपनी नौका को डूबते देखा, तो साथियों और इमीलिया को बचाने के विचार से पानी में कूद पड़े और तैरते हुए अपनी नौका को संभालने का प्रयत्न करने लगे। बड़ा ही रोमांचकारी दृश्य था। एक ओर मल्लाह डूब रहे थे, दूसरी ओर, मछुए उन पर वार कर रहे थे। एकाएक कुछ मल्लाहों ने दोनों बच्चों को नाव से उतार लिया और उन्हें शहतीर के सहारे तैराते हुए बच निकलने का उपाय करने लगे।

उनके साथियों ने किसी तरह अपनी नाव सीधी कर ली और उसका पानी उलीचकर हल्की करने लगे। मछुओं ने जब देखा कि जहाज भी पीछा करता हुआ आ रहा है तो उन्होंने भागना ही उचित समझा। उन्होंने अपनी नाव आगे की ओर घुमाई और साथियों को उस पर बैठकर भाग चलने के लिए पुकारा। मल्लाहों ने उन्हें फिर से घेरने का विचार किया, लेकिन वे इधर-उधर फंसे थे। कोई पानी उलीच रहा था, कोई बच्चों को थामे हुए था और कोई इमीलिया को बचाने की कोशिश कर रहा था। मछुए मौका पाकर निकल भागे। भागते समय भी वे चूके नहीं, बच्चे तो रह गए थे, पर इमीलिया को

उन्होंने फिर से छीन लिया था। मल्लाह लोग जब तक अपनी नाव का संतुलन करके उनका पीछा करते, वे आंखों से ओझल हो चुके थे। अंधेरे के कारण लाचार होकर मल्लाहों ने बच्चों पर ही संतोष किया और उन्हें नाव पर बिठाकर अपने जहाज की ओर चल पड़े।

मल्लाहों द्वारा प्राप्त दोनों बच्चों को जहाज के कप्तान ने रख लिया और जहाज को पूर्ववत् अपने गन्तव्य की ओर ले चला। उसने सोचा, किसी धनी के सौंप देने पर इन बच्चों का पालन भली प्रकार हो जाएगा।

अनेक बन्दरगाहों में ठहरता और यात्रियों को चढ़ाता-उतारता वह जहाज अन्ततः इफीसस पहुंचा। उस समय वहां कोई प्रतिबन्ध नहीं था। ड्यूक की निषेधाज्ञा इस घटना के बहुत दिनों बाद प्रचारित हुई थी। इफीसस में कप्तान का एक मित्र था। नाम था रे। वह निस्संतान था। संयोगवश, जिस समय जहाज इफीसस पहुंचा, रे बन्दरगाह पर टहल रहा था। कप्तान ने उसे बच्चों वाली घटना सुनाते हुए कहा, "अगर कोई इन बच्चों को पाल ले, तो बड़ा अच्छा हो।'

रे ने बच्चे को देखा तो मुग्ध हो गया। उसने कहा, कोई क्यों, मैं ही पाल लूंगा।"

"सच ?" प्रसन्न होकर कप्तान ने पूछा।

"हां भाई, सच ही कह रहा हूं। मुझे तो लग रहा है कि ये बच्चे मेरे लिए ही भेजे गए हैं। मेरे निस्संतान होने पर ईश्वर को दया आ गई है और इसीलिए उसने ऐसी घटना खड़ी करके इन्हें तुम्हारे द्वारा मेरे पास भेजा है।"

"तब ठीक है।" कप्तान बोला, तुम्हें सौंपकर मैं इनकी ओर से निश्चिन्त हो जाऊंगा। किसी अपरिचित के हाथों देने से तो मुझे सदैव यही चिन्ता लगी रहेगी कि कहीं बच्चों को

तकलीफ तो नहीं हो रही ?"

"तुम चिन्ता छोड़ो। बच्चे मेरे घर में अपने पुत्रों की भांति पाले जाएंगे।"

कप्तान संतुष्ट हो गया। उसने निश्शंक भाव से उसी दिन दोनों बच्चों—एण्टीफोलस और ड्रोमिया-ए को रे के हाथों सौंप दिया। संध्या को वह अपना जहाज लेकर आगे की यात्रा के लिए चल पड़ा। दोनों ए इफीसस में रे की देखरेख में पलने लगे। रे की पत्नी भी ममतामयी थी। उसने कभी बच्चों को पराया नहीं समझा। उन पर उसे सगे पुत्रों जैसा प्रेम था। उसने उनके खाने, खेलने, पढ़ने और घुड़सवारी आदि के लिए अच्छी से अच्छा व्यवस्था कर दी। इस प्रकार आपदाओं की आंधी में अपने माता-पिता की गोद से छिटककर दूर जा गिरे एण्टीफोलस और ड्रोमियो नए माता-पिता रे और उसकी पत्नी की गोद में पलने लगे। इमीलिया, ईजियन अथवा दुर्घटना की उन्हें याद भी न रही। समय के पर्दे नें उनकी स्मृति से वह दृश्य ओझल कर दिया। लेकिन उसके नाम में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। रे-दम्पती उन्हें एण्टीफोलस और ड्रोमियो ही कहता था। ये नाम उन्हें दोनों बच्चों के गले में बंधे सोने के लाकेटों से मालूम हुए थे।

ईजियन ने चारों बच्चों को लाकेट पहना रखे थे और उन पर अनेक नाम खुदवा दिए थे। ए और बी का भेद तो बाद में इमीलिया ने कोट के कालरों पर निशान बनाकर पैदा किया था, जो विछुड़ने के बाद सदा के लिए लुप्त हो गया। दोनों बच्चे इफीसस में ही रहकर वयस्क होते रहे। उन्हें इस बात का स्वप्न में भी पता नहीं चला कि इसी नाम, रूप और उम्र के हमारे सहोदर भाई भी हैं।

रोम से ईजियन की आज्ञा लेकर चले हुए दोनों 'बी' को

वर्ष से अधिक का समय हो चुका। इस बीच वे एक
मी पिता का दर्शन न कर सके। अब तो पत्र-व्यवहार तक
हो गया था। दोनों इधर-उधर भटकते हुए अन्ततः सायरे-
सा लौट गए और वहीं स्थायी रूप से रहने लगे।

उधर, इफीसस के रे-परिवार में एक दुर्घटना हो गई। एक
न संध्या समय रे अपनी पत्नी के साथ घूमने गया हुआ था।
ौटते वक्त राह में एक झाड़ी के पास अंधेरे में खड़ा हुआ सांप
र के पैरसे लिपटगया। उसने जैसे ही चौंककरपैर पटका, सांप
ने उसकी पिंडली में काट लिया और उछलकर दूर जा गिरा।
दुर्भाग्यवश रे की स्त्री घबराकरभागी तो सांप उसके पैरके नीचे
आ गया और क्रोध से फुंकारते हुए उसे भी काट लिया। रे ने
पहले तो चिंता न की, लेकिन जब सांप का तीव्र विष शरीर में
फैलकर जलन पैदा करने लगा, तब वह घबराया। आसपास
कोई था भी नहीं, जिसे वहसहायता के लिएपुकारता। विषका
प्रभाव बढ़ता जा रहा था। हारकर वह वहीं बैठ गया, लेकिन
संभल नहीं सका; तुरन्त ही एक ओर को लुढ़क गया। ठीक यही
दशा उसकी पत्नी की भी हुई। वह भी घबराकर पति के पास
आई और उसे सहलाते हुए उसके ऊपर ही लुढ़क गई। विष
प्राणघातकथा। उसने दोनों को अचेत करदिया। वे करवट तक
नहीं ले सके। वह अचेतावस्था ही उनकी अन्तिम निद्रा सिद्ध
हुई।

एण्टीफोलस औरड्रोमियो ए के लिए वह दूसरा अघातथा।
वे अपने जन्मदाता माता-पिता से तो वंचित हो चुके थे, आश्रय-
दाता माता-पिता की छाया भी उनके ऊपर से हट गई। पर
प्रतिष्ठित नागरिकथा, अतः उसके पालितपुत्रों को राजदरबा
में बुला लिया गया। ड्यूक सोलिनस ने दोनों को अपना नि
सेवक बना लिया।



राजमहल पहुंचकर दोनों ए संभल गए। एक तो वे वयस्क हो चुके थे, दूसरे ड्यूक का व्यवहार उनके साथ बहुत ही उदार और कृपापूर्ण रहता था। ड्यूक जहां भी जाता, दोनों को साथ ले जाता। युद्धों में भी वह उन्हें साथ ही रखता था। दोनों ए उसकी सेवा में अपनी सारी शक्ति लगा देते थे। एक बार तो युद्ध-क्षेत्र में सोलिनस बुरी तरह घिर गया था और स्पष्ट था कि वह मारा जाता। लेकिन एण्टीफोलस ने अपनी जान पर खेलकर उसके प्राणों की रक्षा की थी। उसने ड्यूक को अपने नीचे छिपाकर स्वयं शत्रु की चोटें सही थीं, ठीक वैसी ही स्वामिभक्ति ड्रोमियो ने एण्टीफोलस के प्रति दिखाई थी। उसने अपने शरीर की आड़ देकर अपने स्वामी व भाई को बचाया था। उन दोनों के साहस से प्रसन्न होकर ड्यूक ने बाद में उन्हें सदा के लिए सेना और अपनी नौकरी से अवकाश देकर मासिक पेंशन बांध दी, ताकि वे दोनों निश्चिन्त होकर इफीसस में रहते हुए नागरिक जीवन व्यतीत करें। यही नहीं, ड्यूक ने एण्टीफोलस का विवाह भी एक कुलीन और सम्पन्न परिवार की युवती ऐड्रियाना से करा दिया था। एण्टीफोलस सारी विपदाओं को पारकर इफीसस में ही अपनी पत्नी ऐड्रियाना के साथ रहने लगा। ड्यूक की कृपा अब भी उस पर वैसी ही थी, और उसका बालसखा, मित्र भाई अथवा सेवक ड्रोमियो सदैव छाया की भांति उसके साथ लगा रहता था। अभाव, कलह अथवा चिन्ता से सर्वथा मुक्त, वे तीनों एक सुखी परिवार के रूप में रह रहे थे।

इफीसस में उन दिनों सोने का व्यापार अच्छा होता था। अतः सायरेक्यूसा के एण्टीफोलस ने एक दिन अपने सेवक ड्रोमियो को साथ लेकर वहां के लिए प्रस्थान कर दिया। उसे भी वहां के ड्यूक की घोषणा का पता नहीं था, किंतु एक ब्रिटिश जहाज से इफीसस पहुंचे थे, इसलिए पकड़े न जा सके, नगर में प्रविष्ट

हो गए। लोगों ने उन्हें ब्रिटेन का निवासी समझा।

दोनों नगर की एक सराय में पहुंचे और कमरा किराए पर लेकरउसी में अपना सामान रख दिया। शाम हो गई थी, इसलिए थकान के कारण उन्होंने झटपट खाना खाया और सो गए।

रात-भर उन्हें चेत नहीं रहा कि हम कहां पड़े हैं। सवेरे उठे, तो वे बिल्कुल स्वस्थ और प्रसन्न थे। नित्यकर्म से निवट करवेनगर में घूमने के विचार से चल पड़े। सामान सराय में ही रखा रहा, क्योंकि शाम को लौटकर उन्हें फिर वहीं ठहरना था।

पच्चीस वर्ष बाद दोनों भाइयों के जोड़े ए और वो एक साथ एक ही नगर में उपस्थित थे, पर उन्हें एक-दूसरे का तनिक भी पता नही था। और संयोग ऐसा कि उसी दिन ईजियन, इफीसस में वन्दी होकर मृत्यु की घड़ियां गिन रहा था।

सात

सायरेक्यूसा से एण्टीफोलस-द्वी अपने सेवक ड्रोमियो-द्वी के साथ एक व्यापारी के घर पहुंचा। सोने का भाव-ताव करने के बाद व्यापारी ने उससे कहा "लेकिन श्रीमन ! एक विशेष बात है, जिससे आपको सावधान रहना है।"

एण्टी-द्वी चौंका, "ऐसा कौन-सा खतरा है ?"

व्यापारी ने बताया, "यही कि आप यहां अपने को सायरेक्यूसा का नागरिक न साबित होने दें, बल्कि इपीडेमियम, ब्रिटेन फ्रांस या किसी दूसरे देश का बताइए।"

"आखिर क्यों ?" एण्टी-द्वी ने उसे संदेह की दृष्टि से देखा।

"आपको नहीं मालूम कि यहां के ड्यूक ने सायरेक्यूसा से आने वाले प्रत्येक यात्री पर एक हजार मार्क जुर्माना लगा रखा है। उसके वसूल न होने पर यात्री को फांसी दे दी जाती है।"

"यह तो कोई कानून नहीं हैं। जान पड़ता है, तुम्हारा ड्यूक पागल हो गया है।"

"ऐसी बात नहीं है श्रीमन् ! यह सब सायरेक्यूसा के क्रूर ड्यूक से बदला लेने के लिए हो हुआ है। इफीसस के कुछ व्यापारियों को निरपराध होने पर भी उसने प्राण-दण्ड दिया था।"

एण्टी-द्वी ने क्षण-भर कुछ सोचा, फिर अपने सेवक ड्रोमियो-द्वी से कहा, "ड्रोमियो ! अगर यहां ऐसा खतरा है, तो तुम यह सारा धन लेकर सराय में चलो ! मैं भी नगर का रंग-ढंग देखकर थोड़ी देर बाद वहीं आ जाऊंगा।" कहते हुए उसने सोने के

सिक्कों से भरा अपना थैला उसे थमा दिया।

ड्रोमियो-वी जैसा आज्ञाकरी और हितचिंतक था, वैसा ही वुद्धिमान् और वाक्पटु भी। उसने कहा, "स्वामी, मुझे भय है कि कहीं लोग आपकी भाषा से समझ न जाएं कि आप सायरेक्यूसा के निवासी हैं, उस हालत में आप पकड़े जा सकते हैं। इसलिए मेरे विचार से तो आप यह धन अपने साथ ही रखिए, ताकि समय पड़ने पर जुर्माना अदा करके अपने को फांसी के फन्दे से तो वचा सकें।"

एण्टी-वी झल्ला उठा, "अरे मूर्ख, तू मेरे लिए फांसी की कल्पना ही क्यों करता है?"

व्यापारी ने उसे शान्त करते हुएसमझाया, 'आपका सेवक ठीक ही कह रहा है श्रीमन्! आज ही सवेरे यहां सायरेक्यूसा का एक अभागा व्यापारी इस कानून के पंजे में आ गया है। यों उसे देखकरवड़ी दया आती है, क्योंकि उसका झुरियोंदार चेहरा बुढ़ापे और मुसीवतों की कहानी कह रहा है, लेकिन उसे क्षमा न मिलेगी। ड्यूक ने उसे फांसी घर भेज दिया है। अव या तो शाम तक वह जुर्माना अदा करे, या डूवते हुए सूरज के साथ ही अपनो आंखें सदा के लिए मूंद ल।"

एण्टी-वी ने ड्रोमियो से फिर कहा, "जव पकड़ा जाऊंगा, तव देखा जाएगा। फिलहाल यह वन लेकर तुम सराय में चलो, मैं अभी आता हूं।"

ड्रोमियो-वी ने झोला उठाया और अनिच्छपूर्वक सराय की ओर चल पड़ा।

व्यापारी थोड़ी देर तक एण्टी-वी से वातें करता रहा, फिर वोला, "क्या अव आप मुझे आज्ञा देंगे कि अपने दूसरे ग्राहकों के पास जाकर वातचीत कर सकूं?"

"हां-हां, इसमें क्या हर्ज है! तव तक मैं स्वतंत्र रूप से नगर

की सैर कर लूंगा, क्योंकि मुझे कल हो यहां से चले जाना है।"

व्यापारी ने उठकर नमस्कार किया और एक ओर को चल पड़ा। एण्टी-वी वहीं खड़ा सोचने लगा, कैसी विचित्र लीला है ईश्वर की! मैं सात वर्ष से अपने भाई, माता तथा पिता को खोज रहा हूं, फिर भी उनका कहां पता नहीं चल रहा। न जाने मुझे उनके लिए अभी कब तक भटकना पड़ेगा? उसने निराशा-सूचक एक लम्बी सांस खींची और धीमे पैरों सड़क की ओर बढ़ चला।

अभी वह दो-चार ही कदम तक गया था कि सामने से ड्रोमियो आता दिखाई दिया। यह आश्चर्य की बात थी। एण्टी-वी ने उससे पूछा, "इतनी जल्दी कैसे लौटे ड्रोमियो?"

दोनों को भ्रम हुआ, क्योंकि यह ड्रोमियो-वी नहीं था, जो अपने स्वामी का थैला लेकर अभी-अभी सराय गया था, बल्कि यह इफीसस के नागरिक एण्टीफोलस-ए का सेवक ड्रोमियो-ए था, जो अपनी स्वामिनी ऐड्रियाना की आज्ञानुसार, एण्टी-ए की खोज में निकला था। उसका उद्देश्य था—एण्टी-ए को ढूंढकर घर ले जाना, जहां ऐड्रियाना अपनी बहन ल्यूसियाना के साथ पति की प्रतीक्षा कर रही थी। चूंकि दोनों जुड़वां एण्टीफोलस और दोनों ड्रोमियो रूप-रंग से समान थे, इसलिए यहां न तो एण्टी-वी ने ड्रोमियो-ए को दूसरा समझा और न ड्रोमियो-ए को ही एण्टी-वी पर कोई सन्देह हुआ। उन दोनों ने अपने को परस्पर स्वामी-सेवक ही समझा, इसलिए उसी स्वाभाविक ढंग से बातें करने लगे।

एण्टी-वी के प्रश्न पर ड्रोमियो-ए बोला, "जल्दी कहां लौटा श्रीमन्! तीन घण्टे तक लगातार ढूंढने के बाद अब आपको पा सका हूं। चलिए, भोजन तैयार है और स्वामिनी आपकी राह देख रही हैं।"



एण्टी-बी ने समझा, यह हंसी कर रहा है। उसने अपने थैले के सम्बन्ध में पूछा, "वह सारी रकम कहां रख आए ?"

ड्रोमियो को एण्टी-ए द्वारा दो दिन पूर्व दिए गए छः पेंस की याद आई। उसने समझा, स्वामी उसी के संबंध में पूछ रहे हैं। अतः बोला, "वे छः पेंस तो मैंने परसों ही घोड़े को जीन की मरम्मत में खर्च दिये थे न !"

"अरे मूर्ख ! मैं उस थैले की बाबत पूछ रहा हूं, जो अभी-अभी मैंने तुझे दिया था और जिसमें तमाम ड्यूकेट और मार्क भरे हुए थे।"

इस आरोप ने ड्रोमियो-ए चौंका। उसने पूछा, "ऐसा थैला तो आपने मुझे कभी नहीं दिया स्वामी !"

उसका यह साफ इन्कार सुनकर एण्टी-बी उत्तेजित हो उठा। उसने कड़ककर कहा, "बदमाश, नशे में है क्या ? जिम्मेदारी के साथ क्यों नहीं बातें करता ?"

ड्रोमियो ने अपनी निर्दोषिता की सफाई देने के लिए फिर कहा, "जिम्मेदारी न समझता, तो आपको ढूंढने ही क्यों निकलता श्रीमन् ! अब आप अपने घर फिनिक्स चलिए, स्वामिनी आपके बिना व्याकुल हो रही होंगी।"

"फिनिक्स ! कौन स्वामिनी ?"

"आपकी पत्नी की बात कह रहा हूं श्रीमन् !" ड्रोमियो ने फिर विनम्रतापूर्वक स्थिति स्पष्ट करने का प्रयत्न किया।

लेकिन स्थिति स्पष्ट नहीं हुई। होती भी तो कहां से ? यह तो स्वामी-सेवक दोनों ही भिन्न थे, पर भ्रमवश एक-दूसरे को पहचान नहीं पा रहे थे। पत्नी का नाम सुनकर एण्टी-बी जो कि अभी तक अविवाहित था, बोला, "ड्रोमियो ! मैं कहता हूं— हंसी-मजाक बन्द करके ठीक-ठीक बताओ, वह थैला किसे दे आए हो ?"

'यह सब घर चलकर स्वामिनी के सामने ही पूछें, तो
क उत्तम होगा स्वामी, क्योंकि देर बहुत हो रही है।''
''क्यों रे शोहदे ! तू सीधे-सीधे नहीं मानेगा ? मैं कहता हूं—
त का सही जवाब दे, नहीं तो मैं तेरी खोपड़ी तोड़ दूंगा,
लाकी के बल पर तू मुझे बहकाना चाहता है।'' कहकर
ण्टी-बी ड्रोमियो की ओर झपटा।

स्वामी की ऐसी बहकी-बहकी बातों को सुनकर और उसका
ऐसा उग्र रूप देखकर ड्रोमियो डर के मारे भाग खड़ा हुआ।
उसने सोचा—जरूर ही स्वामी को किसी ने कोई नशीली वस्तु
खिला दी है, जिसके प्रभाव से वह ऐसी बेसिर-पैर की बातें कर
रहे हैं।

जब ड्रोमियो भागकर पास की गली में आंखों से ओझल हो
गया, तो एण्टी-बी को चिन्ता हुई। उसके मन में अनेक प्रकार
की शंकाएं उठने लगीं—जान पड़ता है, यह मूर्ख ड्रोमियो मेरे
उस मूल्यवान झोले को कहीं गंवा बैठा है। या शायद किसी ने
इसे ठग लिया होगा। लेकिन वह 'स्वामिनी-स्वामिनो' क्यों कह
रहा था ? कहीं किसी स्त्री ने इसे अपने जाल में तो नहीं फंसा
लिया। सचमुच यह नगर विचित्र मालूम होता है, जैसा इसके
विषय में मैंने पहले सुना था। यहां की जादूगर डायनों और
मायावी बदमाशों की चर्चा दूर-दूर तक होती है। हो न हो, ऐसे
ही किसी धूर्त ने अभागे ड्रोमियो को लूट लिया, और इसकी बुि
भी भ्रष्ट कर दी है, नहीं तो वह फिनिक्स में मेरी पत्नी क
कल्पना कैसे करता ?

शंकाओं से उद्विग्न होकर एण्टी-बी सराय की ओर चल प
ताकि अपने सामान और मूर्ख ड्रोमियो की खोज-खबर ले स

ड्रोमियो-ए भागा, तो सीधे घर पहुंचकर ही रुका।
उसकी स्वामिनी—एण्टी-ए की पत्नी ऐड्रियाना अब भी वह

साथ बैठी प्रतीक्षा कर रही थी। उसका पति सवेरे शीघ्र ही लौटने की बात कह गया था, पर अभी तक नहीं लौटा था। दोपहर हो चुकी थी और भोजन भी ठंडा होकर खराब होने लगा था। ड्रोमियो के आते ही ऐड्रियाना ने पूछा, "ड्रोमियो! तुम्हारे स्वामी आ गए न? कहां मिले थे?"

"भाड़ में जाएं ऐसे स्वामी!" ड्रोमियो ने फूल रही सांस को किसी तरह रोककर कहा, "मैं तो उनको भोजन के लिए बुलाने जाऊं और वह मेरी पिटाई शुरू कर दें।"

दोनों बहनें हंस पड़ीं। ऐड्रियाना बोली, "अच्छा! तो क्या तुम पीटे भी गए? सच-सच बताना ड्रोमियो! तुमने कौन-सी मूर्खता की थी?"

"आपका सन्देश लेकर गया था, यही मेरी मूर्खता थी।"

"क्यों?"

"मुझे जान पड़ता है, उन पर किसी ने जादू-टोना कर दिया है, क्योंकि उनकी सारी बातें बेसिर-पैर की थीं। मैं बार-बार आपका सन्देश कह रहा था, लेकिन वे न जाने क्या ऊल-जलूल बके जा रहे थे।"

ऐड्रियाना ने शंकित होकर पूछा, "क्या बके जा रहे थे?"

"उनकी बातों में न तो कोई सिलसिला था, न तुक। वे ठीक पागलों की-सी बकवास कर रहे थे। अब मैं क्या बताऊं कि उन्होंने क्या कहा?"

"फिर भी तूने जो कुछ सुना है उनके मुंह से 'बता न!"

स्वामिनी का स्वर भी ऊंचा है, यह देखकर ड्रोमियो घबरा गया। उसने किसी प्रकार अपने को संयत करके बताया, "मैंने उनसे घर चलकर भोजन कर लेने के लिए कहा, तो वे पूछने लगे—'वह थैला कहां है, जिसमें ड्यूकेट और मार्क्स भरकर तुझे अभी दिए थे? मैंने फिर समझाया—घर चलिए,

...ह। तो वे बोले—'अरे, मेरा सोना क्या कर डाला तूने ?' ...र भी मैंने उन्हें घर की याद दिलाई। कहा कि स्वामिनी ...की राह देख रही हैं, जल्दी चलिए। इस पर उन्होंने मुझे ...दा कहा और मारने दौड़े।"

ड्रोमियो सांस लेकर फिर कहने लगा। "एक बार फिर मैंने ...हें समझाना चाहा कि स्वामिनी ने अभी तक आपकी प्रतीक्षा ...कुछ नहीं खाया है, लेकिन उन्होंनें तड़पकर कहा—फांसी दे ... अपनी स्वामिनी को। मेरे तो स्त्री है ही नहीं। मैं तो अभी ...क अविवाहित हूं। अगर मैं भाग न आता तो विश्वास कीजिए, ...स्वामिनी, वे मेरी खोपड़ी तोड़ देते। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि उन्हें आप से घृणा हो गई है। या हो सकता है, किसी दूसरी स्त्री की ओर उनका चित्त चलायमान हो गया हो !"

पति के सम्बन्ध में ऐसी बातें सुनकर ऐड्रियाना विचलित हो उठी। उसने ड्रोमियो से कहा, "मैं कहती हूं, तू उनकी बातों पर विचार न करके, किसी भी तरह उन्हें यहां ले आ। जा जल्दी ! वे यहां आ जाएं, तो मैं सब समझ लूंगी कि आखिर उन्हें किस व्याधि ने घेर रखा है, जिसके कारण वे ऐसी बातें कर रहे हैं। जा तू झटपट उन्हें ले आ।"

"लेकिन वहां जाने का अर्थ होगा, उनके हाथों मार खाना।" ड्रोमियो ने भयभीत होकर कहा।

"और न जाने का अर्थ होगा, यहां मेरे हाथों मार खाना।" कहकर ऐड्रियाना ने पास पड़ा हुआ बेंत उठाया।

बेचारा ड्रोमियो फिर उल्टे पैरों भागा, और ऐड्रियाना ल्यूसी के साथ पति की ऐसी मनोदशा के कारण पर विचार करने लगी।

आठ

ड्रोमियो-ए के भाग जाने पर एण्टी-बी जब अपनी सराय सेण्टोर की ओर चला तो कुछ दूर जाने पर उसे ड्रोमियो लौटता हुआ दिखाई पड़ा। लेकिन यह इफीसस वाला ए नहीं बल्कि उसका वास्तविक सेवक ड्रोमियो-बी था। रूपरेखा की समानता ने उन्हें ऐसा भ्रमित कर रखा था कि वे हर बार भटक जाते थे। वे इस बात को लक्ष्य नहीं कर पाते थे कि हम उसी रूप-रंग के किसी दूसरे व्यक्ति से बातें कर रहे हैं और उनका यह भ्रम घटनाओं को लगातार रोचक रूप में उलझाता चला गया।

जब ड्रोमियो-बी पास आ गया तो एण्टी-बी ने पूछा, "कहो ड्रोमियो ! मिजाज ठीक है न?"

"हां स्वामी ! वह तो आपकी दया से ठीक ही है।"

"मेरी दया से नहीं, इसकी दया से !" कहकर एण्टी-बी ने थप्पड़ तानकर वार करने का संकेत किया और हंसने लगा।

ड्रोमियो-बी उसका आशय न समझा। वह चुपचाप खड़ा रहा। एण्टी-बी ने फिर पूछा, "वह थैला कहां है, जो मैंने दिया था?"

"वह तो मैं आपकी आज्ञानुसार सेण्टोर में रख आया हूं।"

"तो फिर, मैं कहता हूं—इसी तरह भलमंसी के साथ क्यों नहीं बातें करते? ऊटपटांग बात क्यों करने लगते हो?"

"क्या कह रहे हैं स्वामी ! मैंने ऐसी ऊटपटांग

? मैं तो सदा से आपका आज्ञाकारी सेवक रहा हूं।"

"लो, फिर बदमाशी शुरू कर दी न !" एण्टो-वी का स्वर ठोर हो उठा।

ड्रोमियो-वी ने शंकित होकर पूछा, "मैं समझ नहीं पाया ोमन् ! भला मैंने क्या बदमाशी की, बताइए तो !"

"अरे शैतान ! इतनी जल्दी तेरा दिमाग फिर गया ? अभी ोड़ी देर पहले तू आया था, तब कह रहा था कि मेरी पत्नी मुझे बुला रही है ! अपनी किस स्वामिनी की चर्चा तू लगातार कर रहा था ? और अब जिस थैले को सेण्टोर में रख आने की बात कह रहा है, उसकी बाबत उस वक्त क्यों झुठलाया था कि मैंने तुझे कोई थैला नहीं दिया ?"

"हे भगवान !" ड्रोमियो ने अपने कान पकड़ कर आकाश की ओर देखते हुए कहा, "ऐसा मैंने कब कहा ? क्या रात में स्वप्न में कही हुई बात भी सच मानी जाएगी ? लेकिन मैंने तो ऐसा कोई सपना भी नहीं देखा था स्वामी ! आपको भ्रम हो गया है।" और वह दीनभाव से एण्टी-वी की ओर ताकने लगा।

एण्टी-वी को सन्देह हुआ कि कदाचित् यह फिर मेरा मजाक उड़ा रहा है। उसने तेज आवाज में कहा, "अरे ओ मक्कार ! यह ढकोसलेबाजी मुझे मत दिखा। तेरी चालाकी मैं समझता हूं। ईश्वर तेरे जैसों को क्षमा नहीं करता। अब मेरे साथ ऐसी धोखाधड़ी का इरादा न करना !"

"क्या मैं धोखेबाज हूं ?" ड्रोमियो ने आश्चर्य से पूछा।

"फिनिक्स में मेरा घर, मेरी स्त्री, उसकी बहन, सेण्टोर का कोई पता नहीं, थैले का नाम-निशान नहीं, यह सब धोखाधड़ी नहीं तो और क्या है ? ऐसा सफेद झूठ क्यों बोल रहा था ?"

"सफेद या काला, मैं तो कोई भी झूठ नहीं बोला श्रीमन् !

बल्कि झोला लेकर जाने के बाद तो मैं [illegible] आया हूं। इसके पहले मैं आपसे कब मिला और कब ये सारी बातें कहीं ?"

"इस सवाल का जवाब यह है!" कहकर एण्टो-बी ने ड्रोमियो की पीठ पर तीन-चार घूंसे जड़ दिये और बोला, "समझ गए ?"

किसी तरह ड्रोमियो ने क्षमा-प्रार्थना करके अपने को छुड़ाया और कहने लगा, "आप कहते हैं, तो मान लेता हूं, लेकिन जहां तक मेरी बुद्धि काम दे रही है, मैंने ऐसा कुछ भी आपको नहीं कहा।"

"तेरी बुद्धि सड़ गई है। मुझसे बात करने के पहले मेरा मिजाज देख लिया कर!"

ड्रोमियो ने सिर झुकाकर कहा, "ऐसा ही करूंगा श्रीमन्!"

ठीक इसी समय एड्रियाना अपनी बहन ल्यूसियाना के साथ वहां आ पहुंची। अपने ड्रोमियो की बातों से वह अधीर और शंकित हो उठी थी, इसलिए उसको भेजने के बाद स्वयं भी पति की खोज में निकल पड़ी। यहां आकर जब उसने एण्टो-बी और ड्रोमियो-बी को देखा, तो उसे भी भ्रम हो गया। एण्टो-बी को उसने अपना पति एण्टो-ए और ड्रोमियो-बी को अपना ड्रोमियो-ए समझा।

वह झपट कर एण्टो-बी के पास आ गई और उसका हाथ पकड़कर कहने लगी, "मेरे स्वामी! तुम्हारे चेहरे पर [illegible] की रेखाएं क्यों हैं? मैं तो सवेरे से तुम्हारी राह देख रही हूं, पर तुम अभी तक घर नहीं पहुंचे। फिर जब मैंने ड्रोमियो को तुम्हें बुलाने के लिये भेजा तो तुम क्रुद्ध क्यों हो उठे? मैंने [illegible] सा अपराध किया है, जिसके कारण तुम मुझसे [illegible] लगे? कहीं ऐसा तो नहीं है कि किसी [illegible]



तुम्हें मोहित कर लिया है और उसके कारण तुम मेरे साथ ऐसा कठोर व्यवहार करने लगे हो। आखिर आज सवेरे तक तो सब कुछ ठीक था, इन्ही दो-तीन घण्टों में ऐसा क्या हो गया, जो तुम इतने कठोर, उदास और क्रोधी बन गए हो? बोलो!"

यह गोरखधन्धा एण्टी-बी की समझ में नहीं आया। वह भौंचक्का-सा उन दोनों सुन्दरियों का मुख ताकने लगा। उसकी दृष्टि कभी कुमारी ल्यूसियाना पर जाती, जो बहन के दुःख में सहानुभूति दिखाने आई थी और कभी ऐड्रीयाना पर, जो उसकी पत्नी बनी हुई उससे प्रेम की भीख माग रही थी। उसने ऐड्रियाना से कहा, "लेकिन मुझे आश्चर्य है सुन्दरी, कि जिस व्यक्ति से तुम यह कह रही हो, वह अभी कुछ ही घण्टे पहले और पहली ही बार इस नगर में आया है। वह अर्थात मैं तुम्हें जानता तक नहो, और एक तुम हो कि अपने विवाह को, प्रेम की दुहाई देती जा रही हो!"

"हाय! तुम इतने कठोर कैसे हो गए एण्टीफोलस! क्या मेरी बहन के साथ ऐसी छलना करके तुम कोई लाभ उठा सकोगे?" इस बार ल्यूनी ने कहा।

"छलना! क्या मैं छलना कर रहा हू?" एण्टी-बो ने पूछा,

ल्यूसी बोली, "यह छलना नही, तो और क्या है? मेरी जिस बहन के लिए तुम प्राण देने को तैयार रहते थे, आज उसी को इस तरह ठुकरा रहे हो! अभी-अभी आपने इसी ड्रोमियो से क्या कहला भेजा था—मेरा तो विवाह ही नहीं हुआ, फांसी दे दें अपनी स्वामिनी को! यहा तक कि जब यह आपको समझाने लगा, आप मारने भी दौड़े थे।"

ड्रोमियो-बी बीच में ही बोल पड़ा, "यह तो सरासर झूठ है श्रीमती मैं कब आपके पास गया था और कब ये सारी बातें कही थीं?"

"अभी तो ! क्या इन कुछ ही मिनटों में ही तुम वह सब भूल गए, जो मुझसे बात कर रहे थे ? ड्रोमियो ! मैं कहती हूं जरा दिमाग के दरवाजे खोलो, बुद्धि से काम लो !" व्याकुल होकर ऐड्रियाना ने कहा और ड्रोमियो को कालर पकड़कर झकझोरने लगी।

एण्टीफोलस-बी चक्कर में पड़ा, उसने सोचा। कहीं ड्रोमियो कोई षड्यन्त्र तो नहीं रच रहा है ? डांटकर बोला, "देखो ड्रोमियो ! मैं साफ-साफ कहे देता हूं, अगर तुमने इन महिलाओं से मिलकर कोई सांठ-गांठ कर रखा है, तो मुझे यह सारा हाल बता दो। वरना अगर तुम्हारी तनिक भी जालसाजी दिखाई पड़ी तो मैं मारते-मारते तुम्हें कुन्दा बना दूंगा। अच्छा थोड़ी देर पहले की भेंट में तुमने भी कुछ ऐसी ही बातें मुझसे कही थीं। ठीक-ठीक बताओ, यह माजरा है ?"

"स्वामी ! मार के डर से तो मैं झूठ नहीं बोलूंगा। जब मैंने इन्हें इससे पहले देखा तक नहीं, तब क्या बताऊं। मैं इनको बिल्कुल नहीं जानता।" ड्रोमियो ने अपनी सफाई देते हुए कहा।

एण्टी-बी ने पूछा, "तो फिर इन्होंने हमारा नाम कैसे जान लिया ? क्या इनके पास किसी जादू की शक्ति है ?"

ऐड्रियाना ने फिर एण्टी-बी का हाथ पकड़ा, "इस मूर्ख दास के मुंह क्यों लगाते हो स्वामी ! यह धूर्त है, हम लोगों के बीच इसी प्रकार के कांटे बिछाकर अपना कोई कार्य सिद्ध करना चाहता होगा। छोड़ो इसे, मेरे साथ चलो। आज तुम्हारे लिए मैंने कितनी परेशानी उठाई !"

एण्टी-बी फिर मनमंथन में व्यस्त हो गया, हे भगवान् ! यह स्वप्न है या प्रत्यक्ष ? आखिर यह स्त्री इतने दीन और सरल भाव से क्यों मुझे अपना पति स्वीकार कर रही है ? इसका प्रेम

इतना स्वाभाविक कैसे हो गया ? इसकी बातों से मेरा मन क्यों अधीर हो उठा है ?

तब तक ल्यूसियाना ने ड्रोमियो को हुक्म दिया, 'ड्रोमियो ! तुम क्यों मुंह लटकाए खड़े हो ? चलकर खाने की मेजें क्यों नहीं ठीक लगवाते ?"

ड्रोमियो ने अपने स्वामी की ओर देखा। उसका प्रश्न समझ कर एण्टी-फी ने कहा, "कुछ भी हो ड्रोमियो ! अब हमें इन महिलाओं के कथनानुसार ही काम करना चाहिए। और खाने का वक्त भी तो हो चुका है ! चलो, खाना खा लें; फिर सोचेंगे कि यह सब क्या है और हम लोग क्यों ऐसे अंधेरे में, ऐसी अनजानी राह में भटक रहे हैं ?"

ड्रोमियो ल्यूसी के साथ-साथ चलने लगा। उसने प्रकट में कुछ नहीं कहा, फिर भी मन-ही-मन सोच रहा था, अवश्य ही यह प्रेत-लीला है। इन डाइनों ने मुझको और मेरे स्वामी को फंसाने के लिए ही यह मोहनी माया फैलाई है, जैसे स्काटलैण्ड में मैकबेथ को तीन डाइनों ने बहका दिया था। लेकिन मैं मैकबेथ नहीं हूं। मैं ड्रोमियो हूं। जरा पेट भर लू , इसके बाद अभी अपने स्वामी को साथ लेकर इन चुड़ैलों के फन्दे से किसी न किसी तरह निकल भागूंगा।

ऐड्रियाना ने एन्टीफोलस का हाथ पकड़ा और उसके बराबर सटकर चलती हुई कहने लगी, "मेरे प्रियतम ! यह कब का बदला लिया है तुमने ? चलो, आज हम तुम दोनों ऊपर एकान्त में भोजन करेंगे ? तब मैं तुमसे एक-एक बात का भेद पूछूंगी। और ड्रोमियो ! तुम दरवाजे पर ही रहना। फाटक भीतर से बन्द रखना और अगर कोई आए तो कह देना कि स्वामी घर में नहीं हैं, कहीं दावत में गए हुए हैं। खाने के समय अक्सर दो-चार आदमी आ जाते हैं। वैसा होने से हमारी

एकान्त की वात-चीत में वाधा पड़ेगी ।"

ड्रोमियो ने सिर झुकाकर कहा, "वही करूंगा श्रीमती !"

"फिर कहे देती हूं, खवरदार किसी को अन्दर न घुसने देना ! भीतर से ही उसे दुत्कार देना, नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं है ।" एक वार फिर से ऐड्रियाना ने ड्रोमियो को सचेत किया, फिर लम्वे-लम्वे डग भरती हुई घर की ओर चल पड़ी ।

थोड़ी देर में सव के सव फिनिक्स पहुंच गए । उस भव्य मकान और उससे लगी हुई फुलवाड़ी को एण्टीफोलस और ड्रोमियो दोनों चकित भाव से देख रहे थे; फिर भी वे कुछ वोले नहीं, फाटक पर पहुंचकर ऐड्रियाना ने कहा, "ड्रोमियो ! जैसा मैं तुमसे कह चुकी हूं, फाटक वन्द करके भीतर की ओर वैठो और इस वात की चौकसी रखो कि कोई भीतर न आने पाए !"

इसके वाद वह एण्टी-वी और ल्यूसियाना को साथ लेकर मकान की ऊपरी मंजिल पर अपने निजी कमरे में चली गई । उसके जाने के वाद ड्रोमियो ने भीतर से फाटक वन्द कर लिया और पास ही पड़ी पत्थर की वेंचपर पैर फैलाकर वैठ गया और सोचने लगा—हिकेट[1] की इन सखियों के फंदे में किस प्रकार अपने स्वामी सहित वचकर भाग सकूंगा ?

ऐड्रियाना ने ऊपर के कमरे में पहुंचकर अपने हाथों भोजन परोसा, फिर एण्टी-वी के पास आ वैठी । सामने ही ल्यूसी ने भी अपनी कुर्सी लगाई और तीनों परस्पर वातें करते हुए भोजन करने लगे । ऐड्रियाना को तो विश्वास था कि सामने उसका पति ही वैठा है इसलिए निस्संकोच वातें कर रही थी ।

पर वास्तविकता कुछ और थी । उसका पति एण्टी-ए जो सवेरे वाजार गया था, इस समय अपने सुन्दर ऐंजिलो के यहां

१ प्रेतनियों की देवी ।

कुछ आभूषणों के सम्बन्ध में बातें कर रहा था थोड़ी देर बाद उसका ड्रोमियो-ए आ पहुंचा। एण्टो-ए सवेरे से ही उस सुनार के साथ बातों में उलझा था। उसने ड्रोमियो को देखकर सुनार से कहा, "मुझे बहुत देर हो गई है। मेरी पत्नी इन्तजार कर रही होगी। देखिए, मेरा नौकर मुझे बुलाने आ रहा है। आप बता दीजिएगा कि ये जंजीर बनवाने के लिए ही इतनी देर तक बैठे थे।"

सुनार ने उसे आश्वासन दिया, "आप चिन्ता न करें, मैं ऐसा ही कह दूंगा।"

अब तक ड्रोमियो-ए पास आ गया था। उसने डरते-डरते हाथ जोड़कर कहा, "स्वामी! घर चलिए, स्वामिनी बुरी तरह नाराज हो रही हैं। मैं तो दुर्गति में पड़ा हूं। इधर आप मारते हैं, उधर वह मारती हैं। इस तरह तो मैं मर ही जाऊंगा।"

"मैंने कब मारा तुझे?" एण्टो-ए ने आश्चर्य से पूछा।

"अभी थोड़ी देर पहले जब आप उस चौराहे पर मिले थे, और सेण्टोर भेजे गए न जाने किस थैले की बाबत पूछ रहे थे।"

"मैं तो सवेरे से यहां बैठा हूं, चौराहे पर कब गया रे?"

"बस एक ही घण्टा पहले की तो बात है स्वामी! क्या इतनी जल्दी भूल गए? वहां आपने मेरे साथ जैसा व्यवहार किया, उसे याद करके तो मैं इस समय भी कांप उठता हूं।"

"ऐसा! बता तो जरा, मैंने कैसा व्यवहार किया था तेरे साथ?"

"आपने मुझसे पूछा, 'मेरा सोना कहां है? मेरा ड्यूकेट और मार्क्स से भरा हुआ थैला कहां है?' फिर कहा, 'मैं तो अविवाहित हूं। मेरे तो पत्नी है ही नहीं। फांसी दे दे अपनी —

नी को।' मैं पूछता हूं—क्या उस समय आप क्रोध में थे? ा संदेश ज्यों का त्यों सुना देने के कारण मैं आपके घर वस में आपकी पत्नी अर्थात् अपनी स्वामिनी के हाथों भी तरह पीटा गया हूं।"

एण्टी-ए ने माथा ठोंक लिया, "हे भगवान! बचपन से पूरी वाई के साथ मेरे पास रहने वाले इस ड्रोमियो को आज क्या गया है? यह ऐसी बेसिर-पैर की बातें क्यों कर रहा है? ने इससे ऐसा कब कहा?"

ड्रोमिया बोला, "ठीक है। मेरा ही दिमाग खराब हो गया है, लेकिन अब घर चलिए। स्वामिनी राह देख रही हैं।"

"हां, चलो! भोजन के लिए आज बहुत देर हो चुकी है।" कहकर एण्टी-ए खड़ा हो गया। उसने ऐंजिलो सुनार और अपने व्यापारी मित्र बॉल्थैसर को भी साथ ले लिया जो दुकान पर बैठा था।

थोड़ी देर बाद जब वे तीनों फिनिक्स पहुंचे, तो एण्टी-ए ने देखा कि फाटक बन्द है। उसने ड्रोमियो-ए से कहा, "ड्रोमियो! भूख तेज हो रही है, आगे बढ़कर फाटक खुलवाओ तो!"

ड्रोमियो ने आगे बढ़कर फाटक पर घूंसा मारते हुए घर के नौकरों के नाम लेकर पुकारा, "माड! ब्रिजेट! मारियन! सिसली! जिलियन! ओ जिन! अरे, कोई दरवाजा क्यों नहीं खोलता?"

भीतर फाटक के पास ही ड्रोमियो-बी बैठा हुआ था। उस यह पुकार सुनी, तो बिना फाटक खोले ही बोला, "अबे उ के पट्ठे! इतने सारे नाम बोल कर क्या हवा को पुकार है? यहां तो अकेला मैं बैठा हूं, और वह भी दरवाजा खो के लिये नहीं, मजबूती से बन्द रखने के लिये।"

एण्टी-ए चकित हुआ—यह कौन है, जो ऐसी मुस्तैदी से दर-
ाजा बन्द किये है ? उसने पुकारकर पूछा, अन्दर से कौन बोल
हा है ? क्या नाम है तेरा ? दरवाजा क्यों नहीं खोल रहा ?"

भीतर से ड्रोमियो-बी ने वैसे ही निश्चिन्त-भाव से उत्तर
या, "भीतर से मैं बोल रहा हूं—अपने स्वामी एण्टीफोलस
ा सेवक। मेरा नाम है ड्रोमियो, और दरवाजा इसलिये नहीं
ोल रहा हूं कि स्वामिनी का ऐसा ही हुक्म है।"

बाहर खड़ा ड्रोमियो-ए इस उत्तर से उत्तेजित हो उठा।
सने डपटकर कहा, "शैतान, मैं कहता हूं, दरवाजा खोल दे,
ही तो तेरी खोपडी में खाल भी न रह जायगी। घर के स्वामी
ौर उनका सेवक ड्रोमियो तो बाहर खड़े हैं और तू वहां से
ातें बघार रहा है ?"

नीचे शोरगुल सुनकर ऐड्रियाना ने एण्टी-बी से कहा,
प्रियतम ! जान पड़ता है, कुछ बाहरी लोग भी खाने के लिये
ा पहुंचे हैं। ड्रोमियो उनको फटकार रहा है। मैं नहीं चाहती
ि कोई दूसरा आज हमारे बीच में बैठकर आनन्द में बाधा डाले,
सलिए तुम खाओ, मैं उन सबको भगाकर अभी आती हूं।"
ौर बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए ही वह ल्यूसी को साथ लेकर
ीचे उतर गई। एण्टी-बी आश्चर्य-विमूढ जैसा बैठा खाता रहा।
न विचित्र घटनाओं का कोई भी तारतम्य उनकी समझ में
हीं आ रहा था।

ऐड्रियाना ने फाटक के पास आकर कहा, "आप लोग चाहे
ो कोई हों, मैं कहती हूं—लौट जाएं, स्वामी इस समय बाहर
ए हुए हैं। जब तक वे नहीं लौटेंगे, फाटक नहीं खुलेगा।"

एण्टी-ए ने अपनी पत्नी का स्वर पहचानकर कहा, "ऐ
ड्रियाना ! ये कहां के शैतान आकर इकट्ठे हुए हैं, जो दर-

नहीं खोल रहे ! देखो तो, मैं किस तरह भूख से वेचैन होकर तुम्हारा इंतजार कर रहा हूं !"

"ठीक है, इंतजार करो। लेकिन यहां नहीं, उधर चले जाओ, पार्क के उस पार। मैं अपने दरवाजे पर ऐसे उचक्कों-आवारों की भीड़ पसन्द नहीं करती।" ऐड्रियाना ने भीतर ही से कहा।

पत्नी के उत्तर पर एण्टी-ए वौखला उठा। तभी उसके सेवक ड्रोमियो-ए ने कहा, स्वामी ! आज आप अपने ही दरवाजे पर और स्वामिनी ही के मुंह से दुत्कारे जा रहे हैं, ऐसी हालत में भी यहां खड़े रहने पर भी धिक्कार है हमको। चहिए कहीं टल चलें।"

"हां, हां, यही करो। अगर तुम टल गए, तो मैं समझूंगी कि वला टल गई। उफ् इन शैतानों ने तो खाना भी हराम कर दिया। ल्यूसी ! इन्हें इसी तरह भौंकने दो, आओ हम लोग ऊपर चलें इनको दुत्कारने के लिए हमारा सेवक ड्रामियो बैठा ही है।" ऐड्रियाना वहन का हाथ पकड़ कर ऊपर की ओर चल पड़ी।

वाहर खड़ा एण्टी-ए पत्नी का ऐसा निर्णय सुनकर जल उठा उसने कड़ककर ड्रोमियो से कहा, "ड्रोमियो ! अगर हम लोग वला हैं, तो सीधे-साधे नहीं टलेंगे। तुम कहीं से एक लोहे की छड़ या हथौड़ा तो लाओ ! मैं अभी इस दरवाजे को तोड़-कर खोल दूंगा।"

भीतर से ड्रोमियो-वी ने उसे ललकारा, आओ-आओ ! दरवाजा तोड़कर भी देख लो। मगर याद रखना, इसके वदले मैं तुम्हारे उस गीदड़ नौकर का सिर भी तोड़ दूंगा, जिसको तुम लोहे की छड़ लाने के लिए भेज रहे हो।"

विवाद वढ़ने लगा। जव दरवाजा किसी तरह न खुला, तो ऐंजिलो और वॉल्थैसर, जो एण्टी-ए के साथ भोजन करने आए

थे, उसे समझाने लगे, "इस समय यहां से चल देना ही ठीक है श्रीमान्! हम बाद में फिर श्रा जाएंगे।"

विवश होकर एण्टी-ए उनके साथ लौट पड़ा, फिर भी उसने पुकार कर ऐड्रियाना से कहा, "श्रो दुष्ट स्त्री! इस समय तो मैं जाता हूं, लेकिन याद रख! जिन गुण्डों को घर में बिठाकर तूने मेरे लिए दरवाजे बन्द किए हैं, उनकी एक भी हड्डी मैं समूची नहीं रहने दूंगा और तेरा घमंड तो मैं अभी तोड़े देता हूं। तेरे जैसी स्त्रियां मुझे बाजार में भी मिल जाएगी।"

ऐंजिलो ने किसी प्रकार उसे सभाला। एण्टीफोलस बकता-झकता उसके साथ चला गया। फिर भी उसके मन में यह संदेह बार-बार उठता रहा, कही ऐड्रियाना का चरित्र भ्रष्ट तो नहीं हो गया है? श्राखिर वह किसे भीतर बिठाए हुए थी?

उसका चित्त बहुत ही उद्विग्न हो उठा था, इसलिए उसने ऐंजिलो से कहा, "मित्र! मैं थोड़ी देर अकेला रहना चाहता हूं, ताकि अपना चित्त स्थिर कर सकूं। तुम जाश्रो श्रौर जंजीर लेकर पार्पेण्टाइन श्रा जाश्रो। मैं वहीं तुम्हारी प्रतीक्षा करूगा।"

ऐंजिल ने 'अच्छा' कहकर विदा ली श्रौर वॉल्थॅसर के साथ अपनी दूकान की श्रोर चल पडा। एण्टी-ए ने एक क्षण को कुछ सोचा, फिर धीरे-धीरे पार्पेण्टाइन की श्रोर बढ़ गया।

अपनी दुकान पर पहुंचकर ऐंजिलो ने जंजीर ली श्रौर तुरंत ही पार्पेण्टाइन की श्रोर चल पड़ा। उसका अनुमान था कि मेरे मित्र एण्टीफोलस को अगर समय पर जजीर मिल गई होती, तो श्राज अपनी पत्नी की ऐसी फटकार न सुननी पड़ती। उसने जंजीर की चमक श्रौर सुन्दरता का एक बार फिर से निरीक्षण किया श्रौर श्राश्वस्त होकर चल पड़ा।

अभी वह कुछ ही दूर गया था कि सामने से एण्टीफोलस

हुआ दिखाई पड़ा। ऐंजिलो लपककर उसके पास पहुंचा बोला, "मैं तो आपसे मिलने पार्पेण्टाइन जा रहा था, अच्छा हुआ कि आप यहीं मिल गए। यह लीजिए !" कर उसने जंजीर का पैकेट खोलकर उसे थमा दिया। एण्टीफोलस ने आश्चर्य से उस की ओर देखा और पूछा, लेकिन यह मुझे क्यों दे रहे हैं ? मैं इसको लेकर क्या करूं ?"

"ताज्जुब है, जिस जंजीर के न होने की वजह से आप अपनी पत्नी द्वारा आज बुरी तरह फटकारे गए, उसी के लिए ऐसा सवाल करते हैं !"

"मेरी पत्नी !"

"क्या आप फिनिक्स में अपने दरवाजे पर की घटना इतनी जल्दी भूल गए ? ही-ही-ही ! जान पड़ता है, आपकी स्त्री आपके इसी भुलक्कड़ स्वभाव के कारण आपसे रूठी रहती है।"

"तुम भी विचित्र आदमी हो ! खैर लाओ, मैं जंजीर लिए लेता हूं। लेकिन इसका दाम तो बताओ !" कहकर एण्टीफोलस ने कौतूहल के साथ ऐंजिलो की ओर देखा।

"उसकी चिन्ता न करें, वह मैं कल आपके घर आकर ले लूंगा। इस समय तो आप इसे लेकर तुरन्त वापस जाएं और अपनी स्त्री को प्रसन्न करें, जो इसके लिए आप से रूठी हुई है। अच्छा, नमस्कार।" ऐंजिलो हंसता हुआ चला गया। उस एण्टीफोलस का यह बुदबुदाना भी नहीं सुना, "अजीव आद हैं यहां के ! जान न पहचान, सोने की जंजीर थमाकर चल बना।"

लेकिन इस घटना के पीछे भी वह भ्रम था। यह एण्टीफो इफीसस वाला ए नहीं था, वल्कि सायरेक्यूसा वी था, जो याना के घर से भोजन करके वड़ी मुश्किल से किसी तरह

पाया था। उसने अपने ड्रोमियो को सेण्टोर भेज दिया था, ताकि वहां से रवाना होने वाला सबसे पहला जहाज मिल सके। इन कुछ घंटों के भीतर ही उसने और उसके सेवक ड्रोमियो-वी ने भलीभांति अनुभव कर लिया था कि इफीसस नगर में अनेक प्रकार की धोखाधड़ी होती है; बड़े-बड़े जादू-टोने किए जाते हैं और तरह-तरह के लालच देकर परदेशियों को गुलाम बना लिया जाता है। ऐड्रियाना का व्यवहार उनकी शंका को और भी पुष्ट कर रहा था। भ्रमवश जब ऐंजिलो जंजीर देकर चला गया तो एण्टी-वी भी सेण्टोर की ओर चल पड़ा।

नौ

...क न खुलने के कारण अपने दरवाजे से खिन्न-चित्त लौटे ...ुए एण्टी-ए ऐंजिलो को पार्पेण्टाइन पर मिलने के लिए करके एक वेश्या के घर की राह पकड़ी। साथ में ड्रोमियो भी था। दोनों ने थोड़ी देर तक वेश्या के गाना सुना, फिर स्वच्छ-चित्त होकर फिनिक्स की ओर ...ट पड़े। चलते समय एण्टी-ए ने वेश्या की हीरे की अंगूठी, ...त दिन की यादगार के रूप में ले ली और वादा किया कि मैं ...म्हें इससे अधिक मूल्य की जंजीर अभी लाकर देता हूं। कुछ ...र आकर एण्टी-ए ने ड्रोमियो से कहा, "ड्रोमियो! चलता ...हूं, तुम जरा बाजार से एक अच्छी मजबूत रस्सी तो लेते आओ, ताकि जरूरत पड़ने पर मैं अपनी स्त्री और उसके गुण्डों को बांधकर अच्छी तरह पिटाई कर सकूं।"

"बहुत अच्छा श्रीमन्! कहकर ड्रोमियो रस्सी लाने बाजार की ओर चल पड़ा। वस्तुतः पिटाई करने के विचार से वह बहुत उत्साहित हो उठा था। फाटक पर की परेशानी उसे भी रह-रह कर बदले लेने को उकसा रही थी।

इसी बीच सुनार और व्यापारी में कुछ तनाव पैदा हो गया। व्यापारी उसी दिन शहर से बाहर जाने की बात कहकर सुनार से अपने सोने की कीमत मांग रहा था और सुनार कह रहा था कि मैंने वह सोने की जंजीर एण्टीफोलस को दी है। उनसे दाम मिलने पर ही आपको भुगतान कर सकता हूं, क्योंकि मेरे पास

नकद कुछ भी नहीं है।

मामला तूल पकड गया। यहां तक कि दोनों को एक अधिकारी की शरण लेनी पड़ी। काफी देर तक सोच-विचारकर अधिकारियों ने उन्हें साथ लिया और एण्टीफोलस के घर फिनिक्स की ओर चल पड़ा, ताकि उससे जंजीर का दाम दिलाकर दोनों का झगड़ा शान्त कर दे। संयोगवश रास्ते में ही वेश्या के घर से लौट रहा एण्टीफोलस उन्हें मिल गया।

ऐंजिलो सुनार ने कहा, "श्रीमन्! मेरे व्यापारी मित्र वॉल्थेसर इसी समय अपने सोने का भुगतान चाहते हैं, इसलिए आप कृपा करके जंजीर का दाम मुझे दे दें।"

"क्या जजीर मिलने के पहले ही?" एण्टी-ए ने उसकी ओर अनादर-सूचक दृष्टि से देखकर पूछा।

"पहले नहीं, वाद मे। जंजीर तो मैं थोड़ी देर पहले आपको दे चुका हूं न?" सुनार ने दृढ़ स्वर में कहा।

एण्टी-ए की आंखें क्रोध और आश्चर्य से फैल गईं, "क्या कहा? मुझे जंजीर दे चुके हो तुम?"

"नहीं दी? पार्पेण्टाइन की राह में मैंने आपको जजीर नहीं दी?"

"तुम्हारी ऐसी तैसी! वदमाश कहीं के!" एण्टी-ए गरजा।

मामला फिर उलझ गया। वही भ्रामक स्थिति यहां भी थी। ऐंजिलो ने जंजीर तो दी थी एण्टी-बी को जबकि यह एण्टी-ए था, किन्तु आकृति की समानता के कारण कोई किसी को पहचान नहीं रहा था। इसी तू-तू मैं-मैं के बीच एण्टी-बी का सेवक ड्रोमियो-बी, जो ऐड्रियाना के घर से सीधे सेण्टोर गया था, जहाज का पता लगाकर भटकता हुआ उधरही आ निकला

वह अपने स्वामी को खोज रहा था। यहां जब कई आदमियों के बीच उसने एण्टी-ए को झगड़ते देखा तो भ्रमवश उसी को अपना एण्टीफोलस समझ बैठा और कहने लगा, "स्वामी ! इन लोगों को मारिए गोली और झटपट चलिए, इपीडैमियम के लिए एक जहाज बिल्कुल तैयार खड़ा है। मैं कप्तान से बात कर आया हूं।"

सुनार के साथ हुई चखचख के कारण एण्टी-ए बुरी तरह झल्लाया हुआ था। ड्रोमियो की बात का अर्थ न समझने के कारण वह और भी बिगड़ उठा। वह इस जगह धोखा खा गया। यह ड्रोमियो तो सायरेक्यूसा वाला बी था, पर उसने उसे अपना ही सेवक समझा, इसलिए तड़प कर बोला, "देख रे लफंगे ! मैं कहता हूं—हर समय की हंसी ठीक नहीं होती। मैंने तुझे रस्सी के लिए भेजा था और तू मुझे इपीडैमियम का जहाज दिखा रहा है ! मारूंगा थप्पड़, मुंह घूम जाएगा। बदमाश कहीं का ! जा इसी वक्त ऐड्रियाना के पास और उसको यह चाभी देकर मेरा ड्यूकेटों वाला थैला ले आ ! देखता नहीं, मुझे यहां लेन-देन के मामले में गिरफ्तार कर लिया गया है ! फौरन जा और पूरी रकम लेकर जेल के फाटक पर आ जाना ताकि वहां मैं अपनी जमानत देकर छूट सकूं। भाग !"

'ऐड्रियाना' नाम सुनकर ड्रोमियो बी को याद आया, इसी स्त्री के घर पर तो हम लोगों ने खाना खाया था। और वह झटपट उधर को भाग चला, क्योंकि अपने स्वामी को बन्दी के रूप में देखकर वह बहुत ही व्यग्र हो उठा था। रास्ते में वह बार-बार यही सोचता था—क्या मेरे स्वामी नशे में हैं ? उन्होंने मुझे रस्सी लेने कब भेजा ? सिपाही उन्हें क्यों बांधे लिए जा रहे हैं ?

जिस समय वह ऐड्रियाना के पास पहुँचा, वह अपनी वहन ल्यूसी के साथ इसी विषय पर वात कर रही थी—आज मेरे स्वामी को क्या हो गया है ? वे ऐसी उल्टी-उल्टी वातें क्यों कर रहे थे ? तभी ड्रोमियो-दो ने पहुंचकर उसे चाभी देते हुए कहा, "श्रीमती ! ड्यूकेटों वाला थैला मुझे तुरन्त दे दीजिए।

"क्यों ? तू इस तरह हांप क्यों रहा है !" ऐड्रियाना ने उसे ड्रोमियो-ए समझते हुए घबराकर पूछा।

"वात यह है ?" ड्रोमियो वोला, "किसी कर्ज के मामले में स्वामी गिरफ्तार कर लिए गए हैं। झटपट मुझे थैला दीजिए।

"कर्ज ! उन्हें कर्ज लेने की ऐसी क्या जरूरत पड़ी ?"

"जी, कर्ज नहीं, उन्होंने सोने की एक जंजीर वनवाई है। उसी का दाम सुनार को देना पड़ेगा, क्योंकि सुनार के कहने पर सिपाही ने उन्हें वांध लिया है और ड्यूक के पास ले जा रहे हैं।"

पति की इस अपमानजनक विपत्ति का समाचार पाकर ऐड्रियाना घवरा उठी। उसने तुरन्त ही अपनी वहन से ड्यूकेटों वाला थैला मंगवाया और ड्रोमियो को देकर वोली, "ला इसे और झटपट पहुंचकर अपने स्वामी की मदद करो। जाओ जल्दी, कहीं रास्ते में ठहरना मत !"

थैला लेकर ड्रोमियो चल पड़ा। ऐड्रियाना थोड़ी देर तक वैठी वहन से वात करती रही, लेकिन उसका मन रमा नहीं। जी उचट-सा गया था, इसलिए अन्त में वह भी ल्यूसी को साथ लेकर पति की खोज में वाजार की ओर चल पड़ी, ताकि जंजीर वाले सुनार का लेनदेन देख-समझ सके।

ड्रोमियो-दो जैसे ही वड़ा चौराहा पार करके वड़ी सड़क पर आया उसे सामने से एण्टीफोलस-दो आता हुआ दिखाई

...। उसे आश्चर्य हुआ कि मेरे स्वामी, जो अभी सिपाहियों ...रा वन्दी थे, इतनी जल्दी कैसे छूटकर आ गए।

उसने प्रसन्नतापूर्वक आगे वढ़कर कहा, "स्वामी ! मुझे यह ...वकर प्रसन्नता हो रही है कि आप विना कुछ दिए ही, उन ...मदूतों के फंदे से छूटकर आ गए हैं। फिर भी, मैं आपकी ...श्रीमतिजी से ड्यूकेटों का थैला ले आया हूं, जिसके लिए आपने मुझे दौड़ाया था। लीजिए संभालिए इसे।" ड्रोमियो ने थैला उसकी ओर वढ़ा दिया।

एण्टी-वी की आँखें फैल गईं। उसने घूरकर ड्रोमियो को देखा, "यह रकम तू कहाँ से उड़ा लाया रे ? मैंने कव किस श्रीमती के पास तुझे भेजा था ? हे भगवान मैं किन जादूगरों के चक्कर में पड़ गया हूं !" और अपने कपाल पर हाथ फेरने लगा।

ड्रोमियो ने भी अपना कपाल पीटकर आकाश की ओर पुकारा, अरे ओ नशेवाज ईश्वर ! तूने मेरे स्वामी को इतना वावला कैसे वना दिया है कि वह अव मुझे पहचानता भी नहीं। तेरे सामने ही इहने थोड़ी देर पहले मुझे जहाज का पता लगाने को भेजा, फिर जव सिपाहियों द्वारा पकड़ा गया तो अपने घर थैला लाने भेजा। और अव कहता है कि जादूगरों के चक्क... में पड़ गया हूं ! वोल रे ईश्वर ! क्या ड्रोमियो जादूगर है ?"

एण्टी-वी ने कहा, "अच्छा वावा ! यह नाटक वन्द कर... चलो वन्दरगाह पर चलें। अगर कोई जहाज मिल सके, तो ... जादूनगरी के वाहर भाग चलें।"

"चलिए, यह तो मैं भी चाहता हूं।" कहकर ड्रोमिय... थैला उठाया और उसे कन्धे हर रखकर वोला, पहले से... चलें न ?"

"लेकिन, "हां' कहकर एण्टी-वी जैसे ही सामने की ओर बढ़ा, एक वेश्या ने आकर उसका हाथ पकड़ लिया और बोली, "अरे एण्टीफोलस ! वाह, खूब मिले ! जब मैं राह देखते-२ थक गई, तब इधर निकली और सौभाग्य से भेंट भी हो गई। लाओ, वह जंजीर कहा है, जो तुमने अभी खाने के समय मुझे देने का वादा किया था ?"

इस जगह वेश्या को भी धोखा हुआ, वस्तुतः उसका संबन्ध एण्टी-ए से था, पर भ्रमवश वह एण्टी-वी से ही उलझ गई। एण्टी-वी अब तक भी परेशानियों से बहुत ही अधीर हो उठा था, उसने झल्लाकर कहा, "ओ मायाविनी ! छोड़ दे मुझे !

वेश्या ने कहा, "तो लाओ मेरी अंगूठी ही वापस कर दो !

एण्टी-वी गरज उठा, "शैतान की खाला ! मैं क्या जानू तेरी अंगूठी !"

"अरे एण्टीफोलस ! क्या तुम भी बेईमानी करने लगे ? अभी खाने के वक्त तुमने मेरे घर में अंगूठी नही ली ? और बदले में जंजीर देने का वायदा नही किया ?"

"मैं कहता हूं, हट जा मेरे सामने से ?"

"अच्छा ! यह गरमी ! तो रुको एण्टीफोलस मैं तुम्हें छका न दूं तो मेरा नाम बदल देना। अभी जाकर तुम्हारी स्त्री के सामने सारी पोल खोलती हू। सचमुच तुम लफंगे हो। ऐसा न होता तो वह खाने के समय तुम्हारे लिए घर के दरवाजे क्यों बंद कर लेती।" कहती हुई वेश्या ताव से एक ओर को चल पड़ी और एण्टीफोलस तथा ड्रोमियो ने बन्दरगाह की राह पकड़ी।

अब तक इफीसस का ड्रोमियो-ए बाजार से एक अच्छी मजबूत रस्सी लेकर आया था। जब वह अपने स्वामी एण्टी-



ए के पास पहुंचा तो एण्टी-ए ने कहा, "आ गए? शाबाश! अब झटपट पूरी रकम इन महाशय को देकर मुझे छुड़ाओ। आज का दिन तो बड़ा ही मनहूस रहा।"

ड्रोमियो-ए ने अपने झोले से रस्सी निकालकर सामने रखते हुए कहा, "बाजार में इससे अच्छी, मजबूत और सस्ती रस्सी नहीं थी स्वामी!"

एण्टी-ए का क्रोध उबल पड़ा, अरे अभागे! क्या उस सारी रकम को देकर यह रस्सी खरीद लाया है? मेरे घर से लाया हुआ धन तूने कहां फेंका? बोल!"

ड्रोमियो-ए चक्कर में पड़ा, इन्होंने कब मुझे धन लाने के लिए घर भेजा था? किस रकम की बात कर रहे हैं? और यह अधिकारी क्यों इन्हें पकड़े लिए जा रहा है? क्या यह कोई सपना है?

ठीक इसी समय एड्रीयाना अपनी बहन को लिए हुए वहां आ पहुंची। उसके साथ पिंच नामक एक ओझा भी था, जो मंत्र तंत्र के द्वारा भूत-प्रेत तथा रोगों को दूर करने के लिए प्रसिद्ध था ऐड्रियाना को विश्वास हो गया था कि मेरे पति या तो प्रेत-बाधा से ग्रस्त हैं या पागल हो गये हैं, तभी तो वे बिना सिर-पैर की उचटी-उचटी बात कर रहे थे! इसलिए वह पिंच को साथ लाई थी ताकि झाड़-फूक कराकर अपने पति को स्वस्थ करा सके। साथ में वह वेश्या भी थी, जो एण्टीफोलस से चिढ़कर अपना बदला लेने के लिए इस सारे उत्पात को और भी बढ़ा रही थी।

ऐड्रियाना को आते देखकर एण्टीफोलस-ए ने कहा, लीजिए मेरी स्त्री भी आ गई। मुमकिन है, यह भी मुझे छुड़ाने आई हो।"

ड्रोमियो ने रस्सी उठाकर ऐड्रियाना को दिखाते हुए पुकारा, "श्रीमती ! आपका सेवक ड्रोमियो कहता है, रस्सी से सावधान ! पिटाई से सावधान !"

एण्टीफोलस क्रुद्ध हो उठा। उसने ड्रोमियो का पीठ पर कई घूंसे जड़ दिए और बोला, "ले, पहले तेरी पिटाई करूंगा। शैतान कहीं का ! हर बात में टांग अड़ाए चला जाता है। गधा ! बेवकूफ !'।

वेश्या ने ऐड्रियाना से कहा, "वह देखिए, अपने निरपराध सेवक को वह किस तरह पीट रहे हैं। अब तो विश्वास हो गया न कि आपके पति पूरे तौर पर पागल हो गए हैं। जरा बेचारे ड्रोमियो की दुर्दशा देखिए !"

एण्टीफोलस का उग्र रूप और ड्रोमियो की पीठ पर पड़ रहे उसके घूंसों को देखकर ऐड्रियाना, ल्यूसी और पिंच सबको विश्वास हो गया कि ऐण्टीफोलस को किसी भयंकर प्रेत ने पीड़ित कर रखा है। ऐड्रियाना व्याकुल होकर कहने लगी, "डाक्टर पिच ! आप जो भी फीस माँगेंगे, मैं दूंगी। मेरे स्वामी को संभालिए !"

अब तक वे सब समीप आ गए थे। पिंच ने आगे बढ़कर एण्टी-ए से कहा, "श्रीमान् ! जरा अपना हाथ बढ़ाइए तो, मैं नब्ज देखूंगा।"

एण्टी-ए ने चिढ़कर कहा, "जरा अपने कान इधर बढ़ाओ तो, मैं उन्हें मसलना चाहता हूं।"

पिंच ने इसे पागलपन का प्रलाप समझा और बुदबुदाते हुए कोई मन्त्र पढ़कर उसके ऊपर थोड़ी-सी मिट्टी फेंकी, फिर ऊंचे स्वर में आज्ञा देने के ढंग से कहने लगा, ओ पापी शैतान ! इस सज्जन मनुष्य को क्यों दु:ख दे रहा है ? मैं कहता हूं, इसे छोड़-

कर भाग जा ! इसकी आत्मा से अपना प्रभाव समेटकर निकल जा !"

एण्टी-ए को और भी क्रोध आ गया उसने कहा, "अरे मूर्ख ! यह वकवास वन्द कर। मैं पागल नहीं हूं। यह जादू-मक्कारी मुझे मत दिखा।'

ऐड्रियाना के मुंह से निकला, "हाय, इन्हें क्या हो गया भगवान !"

एण्टी-ए ने उत्तेजित होकर उसे डांटा, "पापिनी ! भगवान का नाम लेते शरम भी नहीं आती तुझे ! इन लुच्चों, शोहदों के साथ दोपहर-भर चकल्लस करने के वाद अब मेरे पागलपन की दवा कराने आई है ? मेरे घर के दरवाजे मेरे ही लिए वन्द करके तू मुझे वहकाना चाहती है ?"

"इनको क्यों वदनाम करते हो स्वामी ! खाना तो आज तुम्हारे ही साथ मैंने खाया था। हां, यह वात जरूर रही कि तुम वार-वार मेरा पति होने की वात को झुठलाते रहे। आज तुम्हें क्या हो गया है प्रियतम ?" ऐड्रियाना ने करुण स्वर में कहा।

आंखें फैलाकर गरजता हुआ एण्टीफोलस वोला, "क्या कहती है, खाना मैंने तेरे साथ खाया है ? दुराचारिणी ! तूने तो आज मुझे फाटक के भीतर जाने ही नहीं दिया। क्यों रे ड्रोमियो ! वता, तू भी तो मेरे साथ था न ! इस राक्षसी ने आज मेरे साथ कैसा दुर्व्यवहार किया है ?"

ड्रोमियो ने तत्परतापूर्वक कहा, "हां स्वामी ! सचमुच, आज इन्होंने फाटक वन्द कर रखा था। मैं और आप वाहर खड़े चिल्लाते रहे, पर दरवाजा नहीं खुला। वल्कि भीतर से ये श्रीमती, इनकी ये वहनजी और कोई एक उचक्का वरावर हम लोगों को दुत्कारते जा रहे थे। हारकर हम लोग व— — —

आए थे।"

ऐड्रियाना को धरती घूमती हुई-सी जान पड़ी। उसने विक्षिप्तों की भांति फटी-फटी आंखों से ड्रोमियो की ओर देखकर कहा, "क्यों रे टुकड़खोर ! क्या यही तेरा ईमान है? मुझे नहीं मालूम था कि तू हमारे बीच में कांटे बोएगा। क्या दोपहर को तूने फाटक के भीतर बैठकर चौकीदारी नहीं की ? तूने वहीं एक बैल की तरह जमकर खाना नहीं खाया ? और फिर क्या अभी थोड़ी देर पहले ड्यूकेटों से भरा थैला मुझसे मांगकर नहीं लाया ? फिर क्यों सारी बातों को झुठला रहा है ? बोल कमीने !"

लेकिन ड्रोमियो दबा नहीं, उसने निर्भय होकर कहा, "यह तो सरासर झूठ कह रही हैं श्रीमती ! सच तो सिर्फ उतना ही है, जितना मेरे स्वामी और मैंने कहा है।"

ऐड्रियाना को क्रोध आ गया। नागिन की भांति फुंकारती हुई वह ड्रोमियो को पीटने के लिए झपटी, तभी एण्टी-ए ने तड़पकर कहा, "ओ चुड़ैल ! दूर रह, वरना मैं तेरी इन विश्वासघाती आंखों को फोड़ दूंगा।"

हो-हल्ला सुनकर कई राहगीर भी इकट्ठा हो गए थे। एण्टीफोलस को ऐड्रियाना पर झपटते देखकर उन्होंने उसे पकड़ लिया और समझाने-बुझाने लगे। लेकिन एण्टीफोलस का क्रोध शान्त नहीं हुआ। वह झटके दे-देकर अपने को छुड़ाने का प्रयत्न करने लगा ! इस लपट-झपट में दो-तीन आदमी चोट भी खा गए। तब पिंच ने शैतान की भयानकता का अनुमान करते हुए कहा, "आह ! बेचारा एण्टीफोलस आज कैसी दयनीय दशा में है। किसी पापी आत्मा ने इसकी बुद्धि नष्ट कर दी है।" और फिर बुदबुदाता हुआ, मंत्र फूंक-फूंककर उस पर चुटकी-चुटकी धूल

फेंकने लगा।

अकेला एण्टीफोलस उतने आदमियों के विरुद्ध क्या करता? फल यह हुआ कि उसको और साथ ही ड्रोमियो को भी बांध दिया गया। तब ऐड्रियाना ने पिंच से कहा, "डाक्टर! आप इन्हें लेकर मेरे घर चलिए और जिस तरह भी इन्हें आराम मिल सके, उसका प्रबन्ध कीजिए। तब तक इनके महाजन से निपट-कर मैं भी आ जाऊंगी।"

पिंच ने फिर मंत्र बुदबुदाना शुरू किया और कई आदमियों के घेरे में उन स्वामी-सेवक एण्टीफोलस और ड्रोमियो को फिनिक्स की ओर ले चला। उनके जाने के बाद ऐड्रियाना ने अधिकारी से पूछा, "क्या आप बता सकेंगे कि मेरे पति पर किस का और कितना कर्ज है?"

अधिकारी ने बताया, 'उनके ऊपर ऐंजिलो सुनार का दो सौ ड्यूकेट का ऋण है।"

"यह ऋण कैसे हुआ!" ऐड्रियाना ने प्रश्न किया।

"उन्होंने उससे कोई जंजीर ली है।"

"हां ठीक है। मेरे लिए जंजीर बनवाने की बात वे कह रहे थे लेकिन अभी तक लाए तो नहीं।" ऐड्रियाना ने स्वीकार किया।

"और मुझे भी जंजीर ही देने का वादा किया था, "वेश्या बोली, "उसी के बदले मेरी हीरे की अगूठी माग लाए थे। लेकिन अब मुझे कुछ भी नही दे रहे हैं, न जजीर न मेरी अगूठी ही।"

"चलो, जरा उस सुनार से भी बात कर ली जाय। आखिर बिना जंजीर दिए ही वह उसका दाम कैसे मांग रहा है!" ऐड्रियाना ने कहा और सबको साथ लिए हुए बाजार की ओर चल पड़ी।

उधर, वेश्या से चखचख हो जाने के कारण एन्टी -

वी कुछ शंकित हो गया था। उसने अपने सेवक से कहा, "ड्रोमियो यहां तो कदम-कदम पर धोखाधड़ी दिखाई पड़ती है। कहीं ऐसा न हो कि वह वेश्या हमारे पीछे गुण्डों को लगा दे। इसलिए आओ, बाजार में हम लोग एक-एक तलवार खरीद लें।"

ड्रोमियो भी राजी हो गया। दोनों बाजार की ओर चल पड़े।

दस

बाजार पहुंचकर दोनों ने एक-एक बढ़िया फौलादी तलवार खरीदी। फिर वहां से सेण्टोर की ओर चले, ताकि अपने सामान का प्रबन्ध कर लें और आज ही रात के जहाज से सायरेक्यूसा के लिए चल दें। अभी वे थोड़ी ही दूर गए थे कि सामने आते हुए सुनार ऐंजिलो और वॉल्थैसर से उनकी भेंट हो गई। ऐंजिलो ने कहा, "वाह-वाह! कैसे मौके से मिल गए आप! क्या आप अब भी मुझसे ली हुई जंजीर की बाबत इनकार कर सकते हैं, जब कि उसे गले में पहने हुए हैं?"

"लेकिन मैंने इनकार कब किया?" एण्टी-फो ने आश्चर्य से पूछा।

"अच्छा! अभी थोड़ी देर पहले आपने इसे झुठलाया नहीं?

एण्टी-फो को यह भी विपत्ति ही जान पड़ी। उसने तलवार खींच ली और कहा, "देख बे! ज्यादा बदमाशी करेगा तो छाती के आर-पार कर दूंगा।"

व्यापारी और सुनार भी कच्चे न थे। आखिर सोने-चांदी का व्यापार करते थे, तो कुछ हिम्मत भी रखते थे। उन्होंने भी चाकू निकाल लिए और उसकी ओर झपटे। यह देखकर ड्रोमियो-यो उनके बीच में जा कूदा और तलवार घुमाता हुआ कहने लगा, "है कोई माई का लाल? आए ड्रोमियो के सामने! जिस ने अपनी मां का दूध पिया है?"

ीक इसी समय ऐड्रियाना अपनी वहन और वेश्या के साथ
ही आ निकली। यह दृश्य देखकर उसका जी धक् से
। उसने छाती पीटते हुए कहा, "अरे! वे लोग तो यहां
क्या डाक्टर पिंच को इन्होंने मार डाला? उनके रस्से से
टकर ये यहां कैसे आ गए? और अब तो ये तलवारें भी लिए
।"

ल्यूसी भयकातर होकर चिल्ला उठी, "अरे कोई है! दौड़ो,
इन लोगों को पकड़ो, नहीं तो हमें मार डालेंगे?"

स्त्रियों की चीख-पुकार सहज ही प्रभावशाली होती है।
ल्यूसी का आर्तनाद सुनकर कई आदमी दौड़ पड़े, यह देखकर
ड्रोमियो ने कहा, "स्वामी! ये चुड़ैलें तो अब भी पीछे पड़ी
हुई हैं। मेरे विचार से तो आइए हम लोग उस प्रायरी* में छिप
रहें। वहाँ ये नहीं जा सकेंगे। यहां रहने से कहीं खून-खरावी न
हो जाए!"

एण्टीफोलस अपने विरुद्ध उतनी वड़ी भीड़ को देखकर ठगा-
सा रह गया। वह सोच ही नहीं पा रहा था कि लड़े अथवा भाग
जाए। तव तक ड्रोमियो ने उसे फिर पुकारा, "स्वामी! प्रायरी
के भीतर चलिए, नहीं तो विपत्ति में पड़ जाएंगे।"

दूसरे ही क्षण दोनों प्रायरी की चारदीवारी फांदकर भीतर
कूद गए।

प्रायरी में लगभग वीस वर्षों से एक पुजारिनी रहती थी
वही उस मठ की देख-भाल करती थी। उसका नाम क्या थ
वह कहां की रहने वाली थी और उसके परिवार के लोग क
हैं, इसका कभी किसी को पता नहीं चला। वीस वर्ष पुर
वात की जड़ खोदता भी तो कौन?

*ईसाइयों का उपासना-गृह, मठ।

हां, दो-चार पुराने आदमी जो प्रायरी के पास ही रहते थे, उन्हें इतना मालूम था कि एक तूफानी रात को यह पुजारिन निपट अकेली भटकती हुई यहां आ निकली थी और प्रायरी के तत्कालीन पुजारी फादर रिचर्ड ने इसे आश्रय दिया था। तब से यह यहीं है और वृद्ध रिचर्ड की मृत्यु के बाद यही पुजारिन के रूप में प्रायरी की देख-रेख करती आ रही है। स्वाभाव से वह बड़ी दयालु और संतोषी थी, इसलिए लोग उसे श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। बीस वर्षों के भीतर इफीसस के एक भी नागरिक से उसकी कभी अनबन नहीं हुई। वह सब पर सहिष्णुतापूर्वक स्नेह और ममता का भाव रखती थी।

धमाके की आवाज सुनकर पुजारिन बाहर निकली, तो उस ने घबराए हुए एण्टीफोलस और ड्रोमियो को देखा। उसने पूछा, "क्या बात है ? इस तरह क्यों हांफ रहे हो ?"

एण्टो-बी बोला, "हम दोनों परदेशी हैं, लेकिन कुछ लोग हमें पकड़ना चाहते हैं।"

"डरो मत, मैं उन्हें रोक दूंगी।" कहकर पुजारिन बाहर आई और फाटक के पास खड़ी ऐड्रियाना तथा उसके साथियों से कहने लगी, "तुम लोग यह भीड़ क्यों लगाए हुए हो ?"

"मेरे पति और उनका सेवक पागल होकर भागे-भागे फिर रहे हैं। इस समय वे यहां छिपे हुए हैं। मैं उन्हें ले जाना चाहती हूं, ताकि उनकी दवा वगैरह का इन्तजाम कर सकूं। उनका दिमाग बिल्कुल खराब हो गया है।" ऐड्रियाना ने बताया और भीतर जाने के लिए एक पग आगे बढ़ी।

लेकिन पुजारिन ने उसे रोक दिया, "ठहरो ! मैं समझती हूं, उसको पागल बनाने में तुम्हारी कोई गलती है, क्योंकि बहुधा स्त्री के दुष्ट स्वभाव से ही पुरुष पागल होते हैं। तुम्हारी बोल से भी यही प्रतीत होता है कि तुमने उसकी आत्म

दुःख पहुंचाया हैं। खैर, यह एक पवित्र स्थान है, इसलिए म यहां किसी तरह का उपद्रव नहीं होने दूंगी और न उस व्यक्ति को तुम्हें सौंपना चाहूंगी, क्योंकि वह शरणागत के रूप में यहां आया है। रही वात पागलपन की, सो स्वयं उसके लिए उपचार का प्रवन्ध करूंगी।" और इसके बाद वह तेजी से फाटक वन्द करके भीतर चली गई।

पुजारिन के व्यवहार से ऐड्रियाना वहुत ही खिन्न और क्रुद्ध हुई। पर कोई चारा न था। वह वहीं खड़ी-खड़ी वड़वड़ाने लगी इतने में ल्यूसियाना ने कहा, "वहन ! मैं समझती हूं कि इस दुष्ट पुजारिन की शिकायत ड्यूक तक पहुंचा दी जाए। वे अवश्य ही न्याय करेंगे।"

"हां, ठीक है। चलो चलें !" ऐड्रियाना वोली, "मैं ड्यूक पैरों पर लोट जाऊंगी और अपनी सारी विपत्ति सुनाकर प्रार्थना करूंगी कि इस मक्कार पुजारिन से मेरे पति को छुड़ा दें।"

जैसे ही वह चलने को प्रस्तुत हुई, व्यापारी वॉल्थैसर वोला, "श्रीमती ! आप यहीं खड़ी रहिए, ड्यूक अभी इधर से ही जाएंगे।"

"कहां जाएंगे ?" ल्यूसी ने पूछा।

"वध-भूमि की ओर।" व्यापारी ने वताया।

"क्यों ? वहां क्या है ?" ऐंजिलो ने पूछा।

"अरे ! तुम भी नहीं जानते ? सायरेक्यूसा का एक सम्मा- नेत और वृद्ध व्यापारी कल यहां आ निकला है, जव कि वहां ालों के लिए यहां प्रवेश करने की आज्ञा नहीं है। इसी अपराध ं आज उसे पांच वजे प्राणदण्ड दिया जाएगा। देखने च ोगे ?" ॉल्थैसर ने कहते हुए सवकी ओर देखा।

ठीक इसी समय तुरही वजी और दाहिनी ओर से ड्यूक ी सवारी आती दिखाई दी। उनके साथ एक वृद्ध पुरुष रस्से

में बंधा, सिपाहियों और जल्लादों के घेरे में, चल रहा था। लोग सशंकित होकर उधर ही देखने लगे। मृत्यु की ओर कदम बढ़ाते निरपराध ईजियन के झुर्रियोंदार चेहरे पर जीवन के अनेक उतार-चढ़ावों की, हर्ष-विषाद की आंधी-तूफान की कहानी झलक रही थी। सबके मन द्रवित हो गए। लेकिन कोई करता भी तो क्या ? सब चुपचाप, पत्थरों की भांति खड़े थे।

अब तक ड्यूक की सवारी प्रायरी के फाटक पर आ पहुंची थी। ड्यूक ने अपने चोबदार से कहा, "एक बार फिर घोषणा कर दो कि अगर कोई इस बूढ़े व्यापारी ईजियन का जुर्माना एक हजार मार्क भर दे, तो इसको क्षमा किया जा सकता है।"

ऐड्रियाना ने अपने लिए यह मौका अच्छा समझा। वह झपटकर आगे बढ़ी और ड्यूक को सिर झुकाकर कहने लगी, "आदरणीय ड्यूक ! इस प्रायरी की पुजारिन से मेरे पति को छुड़ा दीजिये ! यह उन्हें अपने यहां रोके है, जबकि मैं उन्हें ले जाना चाहती हूं।"

ड्यूक ने ऐड्रियाना को देखकर चकित स्वर में पूछा, "क्यों, बात क्या हुई ? एण्टीफोलस यहां क्यों आए ?"

"अब मैं आपसे क्या बताऊं महान ड्यूक ! मेरा दुर्भाग्य ही उन्हें यहां ले आया है। वे पिछले हफ्ते से कुछ चिंतित थे, लेकिन आज दोपहर से बुरी तरह पागल हो गए हैं। कई आदमियों को उन्होंने मारा है और तरह-तरह की उल्टी-सीधी बातें करते हैं। मैंने डाक्टर पिंच की देख-रेख में उन्हें अपने घर पहुंचाया था, लेकिन वे वहां से भागकर यहां आ छिपे हैं और अब पुजारिन उन्हें मेरे साथ जाने नहीं देना चाहती। मैं उनके लिए बहुत ही व्याकुल हूं, महाराज ! मेरी रक्षा कीजिए !"

"ठहरो, इस तरह अधीर होने से काम नहीं चलेगा। तु
न्याय और सहायता मिलेगी, क्योंकि मेरे ही कहने पर तु

ीफोलस से विवाह किया था। मैं जितना स्नेह उससे करता उतना ही तुम्हें भी मानता हूं। लेकिन पुजारिन तो बहुत य और दयालु हैं, उन्होंने तुम्हें क्यों रोका ? जरा कोई लाओ तो पुजारिन को !" ड्यूक ने अपने सेवकों की ओर खा।

इसी समय एक व्यक्ति भागता हुआ आया और ऐड्रियाना से कहने लगा, "श्रीमती ! भागकर अपने को बचाइए, वरना मारी जाएंगी। आपके पति छूटकर भाग निकले हैं। उन्होंने कई आदमियों को मारा-पीटा भी है और उस बेचारे पिंच की दाढ़ी में आग तक लगा दी है, उनका सेवक ड्रोमियो भी वैसा ही उत्पात मचाए है। वे इधर ही आ रहे हैं। भागिए जल्दी !"

ऐड्रियाना घबरा गई, अभी तो मैंने उन्हें प्रायरी के भीतर घुसते देखा है, अब उधर से कैसे आ रहे हैं ? यह कैसी प्रेत-लीला है ? भय के मारे उसका रंग पीला हो गया। तब तक ड्यूक ने उसे धीरज दिया, "डरो नहीं, वे यहां कुछ भी नहीं कर सकेंगे। मैं अभी सिपाहियों को हुक्म देता हूं कि भाला लेकर उनका रास्ता रोक लें।" उसने अपने सैनिकों को इशारा किया—"सावधान !"

तभी इफीसस के एण्टीफोलस और ड्रोमियो ने दौड़ते हु वहां आकर पुकारा, "महाराज ! मेरे साथ भयंकर छल किय गया है। मुझे बचाइए। मैंने आपके कहने से जिस स्त्री विवाह किया, वही ऐड्रियाना आज मुझे सबसे पागल कहती रस्से में बंधाती है और खुद स्वतंत्र होकर अकेले में गुन्डों साथ मौज कर रही है, दावतें उड़ाती है, जबकि मेरे लिए के दरवाजे तक नहीं खोले गए।"

ड्यूक का स्नेह एन्टीफोलस पर अधिक था। उसने ऐड्रि ... यह शिकायतें सच हैं ?"

पहने थे। बातों-बातों में गरम होकर इन्होंने तलवार खींच ली और बाद में इस प्रायरी में आकर छिप रहे।"

"प्रायरी के भीतर मैं कब गया? झूठ बोलता है?" एण्टीफोलस ने सुनार को फटकारते हुए आंखें दिखाईं।

इस बार वेश्या ने दलील दी, महाराज! एण्टीफोलस की बातें सचाई से दूर हैं। इन्होंने आज मेरी अंगूठी ली है और जंजीर देने का वायदा करके भी नहीं दी। प्रायरी में तो ये मेरे सामने ही कूदे थे और ड्रोमियो भी।"

इन परस्पर विरोधी प्रमाणों को सुनकर ड्यूक भी चक्कर में पड़ गया। मामले की जड़ उसे मिल ही नहीं रही थी। अन्त में उसने कहा, पुजारिन को बुलाओ तो!"

एक सिपाही भीतर की ओर चला। तभी भीड़ के पीछे रस्से में बंधे हुए ईजियन ने एक लम्बी सांस खींची और बड़ी देर से हो रही इस चखचख का कारण जानने के लिए आगे बढ़ा। ड्यूक के सामने खड़े एण्टीफोलस-ए को देखकर वह चकित रह गया। उसे आंखों पर विश्वास नहीं हुआ वह मन-ही-मन ईश्वर को पुकारकर पूछने लगा, यह तो मेरा पुत्र एण्टीफोलस है न! और वह सेवक भी तो ड्रोमियो ही है! भावावेग में दौड़कर वह एण्टीफोलस से लिपट गया और कहने लगा, "बेटा! क्या अपने इस अभागे पिता को नहीं पहचान रहे हो?

सब लोग चकित हो उठे। एण्टीफोलस ने आश्चर्यमयी दृष्टि डालकर ईजियन से पूछा, "पिता? किसके पिता हैं आप? मैंने तो अपने पिता को जीवन में एक बार भी नहीं देखा।"

ईजियन ने उससे लिपटकर कहा, "अरे पुत्र! सात वर्ष में ही भूल गये। याद करो, जब तुम सायरेक्यूसा में मुझसे विदा लेकर चले थे।"

एण्टी-ए ने सशंक दृष्टि से उसे देखते हुये कहा, "लेकिन सारा इफोसस इस बात को गवाही देगा कि एण्टीफोलस ने तो सायरेक्यूसा देखा ही नहीं। वृद्ध महाशय! आपको भ्रम हो गया है।"

"हां व्यापारी ? मृत्यु के भय ने सचमुच ही तुम्हें भ्रमित कर रखा है, क्योंकि तुम्हारी बात में कुछ भी तत्व नही है। एण्टीफोलस को यहां रहते पच्चीस वर्ष से भी ऊपर हो रहे हैं। वह मेरे ही महल में पला है। तब सायरेक्यूसा जाने की बात का इससे क्या सम्बन्ध है ?"

ठीक इसी समय सिपाहो के साथ पुजारिन फाटक के बाहर आई। उसके साथ दोनों शरणागत—एण्टीफोलस और ड्रोमियो भी थे। लोगों की आंखें खुली की खुली रह गई। स्वय ड्यूक तक मूर्तिवत् खड़ा रह गया। किसी के मुंह से एक शब्द तक नहीं निकला। सब के सब स्वप्न-जैसा कौतूहल देख रहे थे—एक ही रूपरेखा के जिनमें बाल-भर का भी अन्तर नही था, दो इण्टीफोलस और दो ड्रोमियो खड़े हैं।

बड़ी कठिनई से ऐड्रियाना ने कहा, "अरे, यह कैसा तमाशा है ? मेरे दो-दो पति कहां से आ गए ?"

ड्यूक ने पूछा, असली ड्रोमिको कौन है ?"

इस पर दोनों ड्रोमियो अपने ही को असली बताने लगे। गुत्थी फिर उलझ गई। तभी एण्टी-बी की दृष्टि ईजियन पर पड़ी। उसने आगे बढ़कर उससे लिपटते हुए कहा, "अरे! पिताजी ! आप यहां कैसे ? यह बन्धन क्यों ?"

और ड्रोमियो-बी ने उसके पैरों पर लोटते हुए पूछा, "मेरे वृद्ध स्वामी ! मेरे पालनकर्त्ता पिता ! तुम्हारे हाथ बंधे क्यों हैं ?"

पुजारिन ने आगे बढ़कर ईजियन के बन्धन खोल दिए और



कहा, "यदि तुम्हीं इन जुड़वां भाइयों एण्टीफोलस के पिता हो तो अपनी इमीलिया से क्यों नहीं बोलते?" वह ईजियन के पैरों में लिपट गई।

बड़ा ही करुण और आनन्ददायी दृश्य था। वृद्ध ईजियन का कंठ अवरुद्ध हो गया। मारे हर्ष के वह कुछ बोल ही न पा रहा था। बड़ी कठिनाई से उसने कहा, "आह! मेरी इमीलिया! यदि मैं सपना नहीं देख रहा हूं, तो बताओ एण्टीफोलस-ए कहां गया, जो तुम्हारे साथ बंधा हुआ था?"

इमीलिया ने बताया, इपीडेमियम के एक जहाज और कोरियन्थ के मछुओं में बड़ी देर तक युद्ध होता रहा। अन्त में बच्चों को तो मल्लाहों ने बचा लिया, पर मुझे मछुए ले भागे। बाद में किसी तरह मैं उनके चंगुल से निकलकर यहां आ गई और तब से इस प्रायरी में हूं। लेकिन दुर्भाग्यवश अपने पूरे परिवार से आज तक वंचित रही। बीच में कभी किसी को एक बार भी नहीं देख पाई।"

ड्यूक की आज्ञानुसार दोनों एण्टीफोलस और ड्रोमियो आमने-सामने खड़े हो गए। रूपरेखा की वैसी विचित्र समानता किसी ने भी देखी-सुनी न थी। लोग लगातार उन्हीं को घूर रहे थे। ड्यूक ने दोनों से उनका अलग-अलग वृत्तान्त पूछा और तब यह भेद खुला कि आज दिन-भर ये दोनों जुड़वां भाई संयोगवश एक-दूसरे की जगह मिलते रहे और इसी से ऐसी भ्रामक स्थिति उत्पन्न हो गई। इस प्रकार ऐड्रियाना और सुनार का कथन भी सत्य था, पर दोनों एण्टीफोलसों की सही पहचान न होने के कारण हर बार समस्या उलझती रही।

एण्टी-ए ने तुरन्त एक हजार मार्क देकर पिता को छुड़ा लिया। सुनार को उसकी जंजीर का दाम मिल गया और वेश्या को अंगूठी प्राप्त हो गई। ड्यूक बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उसी